नवम्बर-२०१९ ◆ वर्ष ८ ◆ अंक ०६ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

नवम्बर-२०१९

बुद्धिमान और युवा पात्र हों,
एक दूसरे पर प्रमुदित हों।
हों समान गुण-कर्म सदा ही,
चिन्तन और विचार एक हों।
दयानन्द का निश्चित मत है,
तभी चित्त-मन सभी एक हों। ।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर—313001 (राज.)

₹ १० ६५

मसालों का अम्बार, एम.डी.एच. परिवार।
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले
सच - सच
MDH Garam masala
MDH Kitchen King
MDH Sambhar masala
MDH Sabzi masala
MDH DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER MAKES DISHES COLOURFUL AND DELICIOUS
MDH Shahi Paneer masala
MDH PEACOCK KASOORI METHI
MDH Chunky Chat masala
MDH Pav Bhaji masala
MDH Chana masala
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
DEGGI
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२०
कार्तिक शुक्ल दशमी
विक्रम संवत्
२०७६
दयानन्दाब्द
१९५

November - 2019

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन	3500 रु.	
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)		
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000	रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000	रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750	रु.

०६

१५

समाचार २८
हलचल २९

०४	वेद सुधा
१०	महाभारत में मांसभक्षण-निषेध
१२	क्या सूर्य पर जीवन संभव है?
१९	रसातल
२१	डॉ. भवानी लाल भारतीय
२३	वेद और भौतिक विज्ञान
२५	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ११/१९
२६	विशेष समाचार
२७	स्वास्थ्य- सेंधा नमक
३०	सत्यार्थ पीयूष- ईश्वर के गुण

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ८ | अंक - ०६

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

उसके गुप्तचर दोनों लोकों को देखते हैं

परि स्पशो वरुणस्य स्मदिष्टा उभे पश्यन्ति रोदसी सुमेके।
ऋतावानः कवयो यज्ञधीराः प्रचेतसो य इषयन्त मन्म ।। - ऋग्वेद ७/८७/३

अर्थ- **(वरुणस्य)** वरुण भगवान के **(स्मदिष्टाः)** प्रशंसनीय गतिवाले **(स्पशः)** गुप्तचर **(सुमेके)** वर्षादि की सुन्दर वृष्टि करनेवाले **(उभे)** दोनों **(रोदसी)** द्युलोक और पृथिवीलोक को **(परिपश्यन्ति)** देखते रहते हैं **(ये)** जो गुप्तचर **(ऋतावानः)** सत्यशील हैं **(कवयः)** गहरे ज्ञानी हैं **(प्रचेतसः)** जो उत्कृष्ट ज्ञानवाले हैं और जो **(मन्म)** ज्ञान को **(इषयन्त)** मनुष्यों तक पहुँचाते हैं।

वरुण भगवान ने द्युलोक और पृथिवीलोक में अपने गुप्तचर छोड़ रक्खे हैं। ये गुप्तचर प्रशंसनीय गतिवाले हैं। कोई छिपे-से-छिपा स्थान ऐसा नहीं है जहाँ ये गुप्तचर न पहुँच जाते हों। द्युलोक और पृथिवीलोक में, अर्थात् सारे ही विश्वब्रह्माण्ड में कहीं भी रहनेवाले प्राणी जो कुछ सोचते-विचारते और करते हैं उस सबको ये वरुण के गुप्तचर जान लेते हैं। भगवान में जो सबके अच्छे और बुरे, पुण्य और पाप कर्मों को जान लेने और उनके अनुसार सुख और दुःख देने की शक्ति है उसी को मंत्र में आलंकारिक रूप में प्रभु के गुप्तचर कहा है। वेद में अन्यत्र भी प्रभु की इस शक्ति का गुप्तचरों के रूप में अलंकारिक वर्णन किया गया है। प्रभु के इन गुप्तचरों की आँखों से कोई बच नहीं सकता। प्रत्येक व्यक्ति का पाप और पुण्य प्रभु को पता लग जाता है। पाप का फल दुःख और पुण्य का फल सुख प्रत्येक को मिलकर रहेगा। कहीं भी छिपकर हम कोई कर्म क्यों न करें हम उसके फल से बच नहीं सकते। प्रभु के गुप्तचरों को सर्वत्र विचर रहा जानकर, प्रभु की सर्वदर्शी दृष्टि को सर्वव्यापक जानकर हमें पाप से बचना चाहिए और पुण्य में प्रवृत्त होना चाहिए।

मन्त्र के उत्तरार्द्ध में इन गुप्तचरों के बड़े सुन्दर विशेषण दिए गए हैं। इनसे कर्मफल के सिद्धान्त पर बड़ा सुन्दर प्रकाश पड़ता है। हमने अभी कहा है कि गुप्तचरों का यह वर्णन आलंकारिक है। वस्तुतः ये गुप्तचर भगवान से भिन्न और कुछ नहीं हैं। भगवान को ही, उनमें सर्वदर्शिका शक्ति रहने के कारण, इस आलंकारिक वर्णन द्वारा गुप्तचर कहा गया है, इसलिए गुप्तचरों के इन विशेषणों के अर्थों पर ध्यान दें और देखें कि उनसे कर्मफल के सिद्धान्त पर क्या प्रकाश पड़ता है-

'ऋतावान्ः'- ये गुप्तचर सत्यशील हैं। जो बात जैसी हुई है उसे वैसी ही ये जानते हैं। अपनी ओर से घटा-बढ़ी करके ये अपने स्वामी को मिथ्या समाचार नहीं देते, इसलिए इनका स्वामी जब प्राणियों को उनके कर्मों का फल देने लगता है तब जिसने जो कर्म जितना किया होता है उसके अनुसार उसे जितना फल मिलना चाहिए ठीक उतना ही मिलता है। दूसरे शब्दों में प्रभु सत्यशील हैं। वे प्रत्येक व्यक्ति के प्रत्येक कर्म को ठीक-ठीक रूप में जानते हैं और प्रत्येक कर्म के अनुसार जिसे जितना फल मिलना चाहिए ठीक उतना ही फल उसे देते हैं। वे यों ही किसी को उसके कर्म को ध्यान में न रखते हुए कम-अधिक फल देकर मिथ्या व्यवहार नहीं कर सकते। एक शब्द में-वे किसी को उसके कर्मों का फल देते हुए उसके साथ पूर्ण न्याय का बर्ताव करते हैं।

'प्रचेतसः'- वे प्रकृष्ट ज्ञानी हैं। प्रत्येक क्षेत्र का उनके पास बहुत ऊँचा ज्ञान है। **'ऋतावानः'** विशेषण द्वारा गुप्तचरों के सत्य को ज्ञात करने के गुण का वर्णन किया गया था। सत्य बिना ज्ञान के पता नहीं लग सकता। जितना हमारा ज्ञान अधिक होगा उतना ही हम सत्य और असत्य का विवेक अधिक अच्छी प्रकार कर सकेंगे। जब वरुण के गुप्तचर सत्यशील हैं तब उन्हें **'प्रचेताः'** होना ही चाहिए। बिना ज्ञान के कोई सत्यशील नहीं हो सकता। दूसरे शब्दों में इस विशेषण का भाव यह है कि भगवान में सत्यशील, न्यायकारी होने के लिए आवश्यक गुण ज्ञान भी है।

'कवयः'- वे बहुत गहरा ज्ञान रखनेवाले ज्ञानी हैं। वरुण के गुप्तचरों में न केवल ज्ञान है प्रत्युत् गहरा ज्ञान है। कवि का शब्दार्थ क्रान्तदर्शी होता है। जो पदार्थ के तह तक का ज्ञान रखता हो, सब आवरणों का भेद कर जिसकी दृष्टि पदार्थों के असली रूप को जान लेती हो, उसे क्रान्तदर्शी या कवि कहते हैं। वरुण के गुप्तचर ऐसे ही क्रान्तदर्शी ज्ञानी हैं। **'प्रचेतसः'** विशेषण द्वारा उनमें ज्ञान की अधिकता बताई गई थी। **'कवयः'** विशेषण द्वारा उनमें बुद्धि की सूक्ष्मता, बुद्धि की गहराई तक

पहुँचने की, मर्मस्पर्शिता की शक्ति बताई गई है। वे जहाँ ज्ञानी हैं वहाँ उनमें बुद्धि की अन्तर्भेदिता भी है। तात्पर्य यह है कि प्रभु में जहाँ ज्ञान की प्रचुरता है वहाँ उनकी बुद्धि भी बड़ी मर्मस्पर्शी, बड़ी अन्तर्भेदी है, इसलिए वे सत्यशील होकर सबके साथ न्याय कर सकने में समर्थ होते हैं।

'यज्ञधीराः'- उनकी बुद्धियाँ यज्ञ में लगी रहती हैं। यज्ञ लोकोपकार के कामों को कहते हैं। प्रभु के गुप्तचर यज्ञ में अर्थात् लोकोपकार के कामों में अपनी बुद्धियों को लगाये रखते हैं। वे जो अपने स्वामी को भाँति-भाँति के समाचार लाकर देते हैं उसका प्रयोजन लोगों को सताना नहीं होता। उसका प्रयोजन तो वस्तुतः लोकोपकार होता है। लोगों को यह पता रहे कि उनके आचरणों और संकल्प-विकल्पों को प्रभु के गुप्तचर देख रहे हैं, इसलिए वे भूलकर भी पापाचरण न करें और किसी पर अन्याय-अत्याचार न कर सकें, कोई किसी को किसी प्रकार का क्लेश न दे सके, इस प्रयोजन से प्रभु के गुप्तचर सर्वत्र फिरते हैं। दूसरे शब्दों में तात्पर्य यह है कि प्रभु ने जो कर्मफल की व्यवस्था चला रक्खी है उसका प्रयोजन वस्तुतः लोकोपकार है। पापचरण का, बुरे कर्मों का फल अवश्य मिलकर रहेगा, ऐसा जान लेने पर मनुष्य किसी पर अन्याय-अत्याचार करने और किसी के जीवन को दुःखी बनाने से बचते रहेंगे और इस प्रकार जन-समाज बड़ी व्यवस्थित और सुखपूर्ण रीति से चल सकेगा। जिन व्यक्तियों को भगवान उनके बुरे कर्मों का फल दुःख दे रहे होते हैं उन पर भी प्रभु एक प्रकार से उपकार ही कर रहे होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण सुख प्राप्त करना चाहता है। पूर्ण सुख भगवान की प्राप्ति से ही हो सकता है। भगवान की प्राप्ति हमें तब हो सकती है जब हम अपने आपको पाप से, दुराचरण से, बुरे कर्मों से सर्वथा दूर करके पूर्ण रूप से निष्पाप, निष्कलंक और निर्मल बना लें। भगवान जो हमें बुरे कर्मों के दण्डरूप में दुःख देते हैं, वह हमें निष्पाप होकर पवित्र बनने में और पवित्र बनने द्वारा भगवान की प्राप्ति का अधिकारी बनने में सहायता देता है, इसलिए प्रभु हमें कर्मफल देने की जो व्यवस्था चला रहे हैं वह लोकोपकार के लिए चला रहे हैं। प्रभु का दण्ड-विधान भी एक यज्ञ है।

'मन्म इषयन्त'- वे मनुष्यों तक ज्ञान पहुँचाने का एक साधन हैं। हम अपने-आपको और अपने आस-पास के मनुष्यों और पशु-पक्षियों में से किसी को जब किसी दुःख से पीड़ित देखते हैं तब हमारे मन में यह विचार उठता है कि हमने या इस प्राणी ने पता नहीं कौन-सा पाप कर्म किया है, जिसका फल यह दुःख भोगना पड़ रहा है। यह दुःख-भोग बताता है कि कोई-न-कोई पाप अवश्य हुआ है। नहीं तो न्यायकारी भगवान बिना पाप के यह दुःख नहीं दे सकते थे। यदि हम भविष्य में दुःख से बचना चाहते हैं तो हमें सभी पापों से बचना चाहिए। यह वर्तमान दुःख न जाने किस पाप-कर्म का फल है इसलिए भविष्य में दुःखों से बचने का यही उपाय है कि हम सभी प्रकार के पाप-कर्मों को त्याग दें। इस प्रकार उत्पन्न हुए विचार द्वारा जब हम अपने पापाचरणों को त्याग देते हैं तब निष्पाप होकर प्रभु के दर्शन पाकर मोक्षानन्द उपभोग करने के अधिकारी बन जाते हैं और हमारा संसार भी सुखपूर्व चलता है। इस प्रकार प्रभु की कर्मफल-व्यवस्था हमारे अन्दर पाप से बचने का विचार उत्पन्न करके हमें एक प्रकार से पवित्र बनने का ज्ञान देती है। इसके अतिरिक्त कर्मफल-व्यवस्था पूर्वजन्म की सत्ता, जीवों का अनादित्व आदि अनेक विषयों का ज्ञान कराती हैं। कर्मफल की व्यवस्था पर विचार करना आरम्भ कीजिए और आप देखेंगे कि हमें ये सारी बातें माननी आवश्यक हो जायेंगी।

सूक्त में प्रभु की महिमा का वर्णन चल रहा है। प्रस्तुत मंत्र में प्रभु ने कर्मफल की जो अद्‌भुत व्यवस्था बाँध रक्खी है उसकी ओर ध्यान खेंचकर उनकी महामहिमा का अनुभव कराया गया है। इसके अतिरिक्त मंत्र में द्युलोक और पृथिवीलोक को **'सुमेके'** अर्थात् वर्षादि की सुन्दर वृष्टि करने वाले कहकर भी प्रभु की महिमा की ओर निर्देश कर दिया गया है। ये द्युलोक और पृथिवीलोक हमारे लिए जो अनेक प्रकार के मंगलों की वर्षा कर रहे हैं, वह सब प्रभु की ही तो महिमा है। उनकी महिमा के बिना यह द्यौ और यह पृथिवी **'सुमेका'** मंगलों की वर्षा करने वाली कहाँ बन सकती थी?

पाठक यह भी देखेंगे कि मंत्र में प्रभु के आलंकारिक गुप्तचरों का वर्णन कर राष्ट्र के गुप्तचरों का भी कैसा आदर्श वर्णन कर दिया गया है। उन्हें अपने राजा तक राष्ट्र और परराष्ट्र के सब समाचारों का ज्ञान पहुँचाने वाला तो होना ही चाहिए। इसके साथ ही उन्हें **'ऋतवान्', 'प्रचेतसः', 'कवयः'** और **'यज्ञधीराः'** भी होना चाहिए तभी वे आदर्श गुप्तचर हो सकेंगे।

हे मेरे आत्मन्! प्रभु की अटल कर्मफल व्यवस्था और साथ ही उनके पूर्ण ज्ञान, पूर्ण न्याय और पूर्ण मंगलमय प्रयोजन में विश्वास रखके सत्यकर्मों के पथ पर आगे बढ़ता चल। तेरा अवश्य कल्याण होगा।

- आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति

(साभार- वरुण की नौका)

महर्षि का काशी प्रवास

किशोर मूलशंकर के जीवन में सर्वाधिक हलचल दो घटनाओं ने मचाई थी। प्रथम जब वे १४ वर्ष के थे तो शिवरात्रि को शिवमूर्ति पर चूहों को चढ़ते देख जब जड़ पूजा में अनास्था हुई तब उन्हें बताया गया कि सच्चे शिव तो कैलाश पर्वत पर रहते हैं। द्वितीय जब बहिन और चाचा की मृत्यु हुई तो मृत्यु को लेकर के उस पर विजय प्राप्त करने की कामना रखने वाले मूलशंकर को बताया गया कि योगसिद्धि के द्वारा यह सम्भव है। तो मूलशंकर ने २१ वर्ष की अवस्था में जब घर का त्याग किया तो उनके समक्ष दो ही उद्देश्य थे एक सच्चे शिव को प्राप्त करना और दूसरा मृत्यु पर विजय प्राप्त करना। आगामी १६ वर्षों में वे लक्ष्य प्राप्ति हेतु कहाँ-कहाँ नहीं फिरे परन्तु अन्ततोगत्वा जब १८ घण्टे का समाधि सुख दयानन्द को प्राप्त हो गया तो एक प्रकार से उनके दोनों लक्ष्य पूरे हो गए। अब मोक्ष के लिए उनको एक जीवनमुक्त महात्मा के रूप में ही जीवन व्यतीत करना था। परन्तु इस बीच भारत की जो दशा उन्होंने देखी उसने उनकी सोच में आमूलचूल परिवर्तन ला दिया। जब गुरुवर दण्डी विरजानन्द की पाठशाला से निकले तो गुरु ने अविद्या के जंजाल से देशवासियों को मुक्त करने में अपना जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी। फिर एक और घटना घट गई। प्रातःकाल स्वामी जी नदी किनारे समाधि लगाए बैठे थे अचानक एक आवाज से आँखें खुलीं तो जो देखा उसने इस युवा संन्यासी को हिला दिया। एक माँ अपने मृत बेटे को जल में प्रवाहित करने आई परन्तु बच्चे के शरीर पर जो कपड़ा उसने लपेटा हुआ था, वह क्योंकि उसकी साड़ी का टुकड़ा था और अपनी लज्जा को ढकने के लिए उस टुकड़े की आवश्यकता थी इसलिए उस माँ ने बच्चे के शरीर पर से वह कफन उतार कर अपने को ढक लिया। दयानन्द का हृदय रुदन करने लगा। जिस आर्यावर्त्त को सोने की चिड़िया कहा जाता था आज उसकी एक माँ की निर्धनता की यह स्थिति है कि वह अपने मृत बच्चे के लिए एक कफन का इंतजाम भी नहीं कर पाई स्वामी जी ने सोचा कि स्वयं का मोक्ष तो होता रहेगा परन्तु आर्यावर्त्त को उसके गौरव पर आसीन करने का बृहत्तर कार्य भी उनको ही सम्पन्न करना होगा। आर्यावर्त्त के गौरव के विषय में स्वामी जी के क्या विचार थे इसकी संक्षिप्त झलक पाठकों को प्रस्तुत करने के लिए हम यहाँ सत्यार्थ प्रकाश के ग्याहरवें समुल्लास के २-३ उद्धरण प्रस्तुत करना चाहते हैं।

'ये आर्यावर्त्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है इसीलिए इस भूमि का नाम स्वर्ण भूमि है क्योंकि यही स्वर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है।'

'आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही स्वर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।'

जितनी विद्या भूगोल में फैली है वह सब आर्यावर्त्त देश से मिश्र वालों, उनसे यूनानी, उनसे रुम और उनसे यूरोप देश में, उनसे अमेरिका आदि देश में फैली है।'

आर्यावर्त्त के इस गौरव को प्रस्तुत करने के साथ ही उनका पूर्ण विश्वास था कि आज भी उस गौरव को हासिल किया जा सकता है। आर्यावर्त्त के पतन के कारणों का विश्लेषण करके स्वामी जी इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि वैदिक शिक्षाओं से दूर हो जाने के कारण ही आर्यावर्त्त की यह स्थिति हो गई है। वेद मत को छोड़कर के पुराणों में वर्णित अनेक मिथ्या मान्यताओं, बाह्य आडम्बरों और अवैदिक जीवन पद्धति को अपनाना, जिसमें मूर्ति पूजा, अवतारवाद, पाप-क्षमा का सिद्धान्त, अस्पृश्यता की बढ़ती प्रवृत्ति, नारी जाति की अवमानना और ब्रह्मचर्य सेवन को तिलांजलि दे देना सम्मिलित हैं, हमारे पतन का प्रमुख कारण

बना। इसलिए महर्षि दयानन्द ने आर्यावर्त्त के खोए हुए गौरव की पुनः प्राप्ति के लिए अवैदिक मतों का खण्डन करना प्रारम्भ किया। इसका एक कारण यह भी था कि हिन्दू जाति आज भी वेद के प्रमाण में पूर्ण विश्वास रखती थी अतः स्वामी जी को यह सरल मार्ग दिखा कि तथाकथित पंडितों को मजबूर किया जाए कि या तो वे इन अनाचारों व कुरीतियों का उद्गम अथवा व्यवस्था वेद में दिखायें अन्यथा वेद विरुद्ध होने के कारण इनका त्याग करें।

इसलिए स्वामी जी ने शास्त्रार्थ प्रारम्भ किए। स्वाभाविक रूप से, 'मूर्तिपूजा, वेद विहित नहीं है' यह उनका प्रमुख विषय था, क्योंकि अन्य जितने भी अनाचार एवं मिथ्याचार थे वे मूर्तिपूजा से ही उपजते हैं, ऐसा दयानन्द का मानना था।

इन शास्त्रार्थों के क्रम में फर्रूखाबाद में जब पंडित श्री गोपाल से इसी विषय पर उनका शास्त्रार्थ हुआ और उसमें पंडित जी पराजित हुए तो उन्होंने एक नया काम किया। वे काशी से मूर्तिपूजा के समर्थन में व्यवस्था ले आये। अब ऋषि दयानन्द ने विचार किया कि अगर देश के बहुत बड़े हिस्से से या अधिकाधिक जनता के मानस से मूर्तिपूजा आदि आडम्बरों को मिटाना है तो आवश्यक है कि उस समय 'विद्या की नगरी' कही जाने वाली काशी के पंडितों से यह मनवाया जाए कि वेदों में मूर्तिपूजा नहीं है, इसलिए स्वामी जी काशी पहुँच गए और उन्होंने अपने व्याख्यानों में इस बात को प्रतिपादित करना प्रारम्भ कर दिया कि मूर्ति-पूजा वेद विहित नहीं है। परिणाम यह हुआ कि लोग बड़े कौतूहल के साथ स्वामी जी के प्रवचन सुनने को आते थे और अनेक मंदिर जाना छोड़ वापस लौट जाते थे। इन घटनाओं ने काशी की पंडित मंडली के सहित रामनगर नरेश महाराजा ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह को भी हिलाकर रख दिया। उन्होंने पंडितों को बुलाया कि आप लोग दयानन्द से शास्त्रार्थ करें। पंडितों का कथन था कि हमारी तो वेद में कोई गति नहीं है। इस पर महाराजा ने उन्हें १५ दिन तैयारी करने का समय दिया। यहाँ तक कि पंडितों के घर अतिरिक्त तेल भिजवाया गया कि ताकि वे रात्रि में जागकर शास्त्रार्थ की तैयारी कर सकें। कहीं न कहीं महाराजा के मन में और काशी के पंडितों के मन में यह विचार था कि अगर दयानन्द पराजित नहीं होते हैं तो छल बल से उनके पराजय की घोषणा की जायेगी। इसी कारण, शास्त्रार्थ की बात सुनकर जब काशी के कलक्टर ने ये कहा कि शास्त्रार्थ रविवार के दिन रखा जाए ताकि वे स्वयं इसमें उपस्थित हो सकेंगे, तो महाराज ने जान बूझकर रविवार के दिन शास्त्रार्थ नहीं रखा क्योंकि उन्हें भय था कि कलक्टर की उपस्थिति में वे गड़बड़ नहीं कर पायेंगे।

अन्ततोगत्वा १६ नवम्बर १८६९ का वह दिन आ पहुँचा जिस दिन आनन्द बाग में शास्त्रार्थ होना था। बताते हैं कि लगभग पचास हजार की भीड़ उस दिन आनन्द बाग में उपस्थित थी। हरेक के मन में उस अद्भुत संन्यासी को देखने की व सुनने की ललक थी जिसने काशी जैसे मूर्तिपूजा के गढ़ में आकर के मूर्तिपूजा को ही चुनौती देने का साहस किया था। दयानन्द को मनोवैज्ञानिक रुप से पराभूत करने के उद्देश्य से पंडित लोगों ने अपने शिष्यों सहित बड़ी-बड़ी भव्य पालकियों में बैठकर, अपनी जय-जयकार के नारों के बीच आनन्द बाग में प्रवेश किया ताकि दयानन्द मनोवैज्ञानिक रूप से कमजोर पड़ जायें। परन्तु

उस संन्यासी के बारे में इनका यह आंकलन गलत था। ऐसी परिस्थितियों में जबकि भीड़ में काशी के कुछ छटे हुए बदमाश भी दिखाई दे रहे थे, भक्त बलदेव ने कहा कि अब नैय्या कैसे पार लगेगी उनके इरादे ठीक नहीं जान पड़ते। तब स्वामी जी ने बड़ी निश्चिन्तता के साथ उत्तर दिया कि 'बलदेव! एक ईश्वर है, एक धर्म है और एक मैं हूँ, डर और चिन्ता की क्या बात है? सत्य की सदैव विजय होती है।'

काशी नरेश भी आ पहुँचे थे। शास्त्रार्थ प्रारम्भ होने से पूर्व, नियंत्रित संचालन के लिए बनारस के कोतवाल पंडित रघुनाथ ने जो व्यवस्था बनाई थी, उसे तोड़ दिया गया और २७ पंडित जिनमें पंडित ताराचन्द तर्करत्न, पंडित बालशास्त्री, विशुद्धानन्द आदि सम्मिलित थे, ने एक तरह से स्वामी दयानन्द को घेर लिया। कोतवाल साहब ने महाराजा से इसकी शिकायत की परन्तु उनकी बात अनसुनी कर दी गई। स्वामी जी के एकमात्र समर्थक पंडित जवाहरदास को बाग के अन्दर ही नहीं घुसने दिया। जब यह समाचार कोतवाल साहब के पास पहुँचा तो उन्होंने उन्हें अन्दर बुलाया परन्तु पंडितों ने उन्हें स्वामी जी के पास नहीं बैठने दिया।

शास्त्रार्थ में पहला सारभूत प्रश्न ही यह था कि क्या पंडितगण वेद में मूर्तिपूजा का विधान दिखला सकते हैं? इसका उत्तर भी उतना सीधा ही यह होता कि उस वेदमंत्र या उन वेदमंत्रों को पंडित मण्डली द्वारा उद्धृत कर दिया जाता जो मूर्तिपूजा का विधान

करते हैं। परन्तु ऐसा संभव था ही नहीं इसलिए पंडितों ने बार-बार अनेक विषयों को बदला। स्वामी जी धैर्यपूर्वक जवाब भी देते रहे और प्रश्न भी करते रहे। स्वामी जी की इस आपत्ति को कि शास्त्रार्थ को विषयान्तर किया जा रहा है अनसुना कर दिया गया। साढ़े चार घण्टों तक यह नाटक चलता रहा और जब शाम का धुंधलका छाने लगा तो जानबूझकर दो पत्रों को वेद के पत्रे बताकर स्वामी जी को दिया गया कि इनमें पुराणों को विशेषण के तौर पर नहीं लिया गया है अर्थात् पंडित मण्डली का आशय था कि १८ पुराणों की बात वेद मूलक है। स्वामी जी उन पत्रों को लेकर विचार कर ही रहे थे कि एक सुनियोजित षड्यंत्र के अन्तर्गत 'दयानन्द हार गए' का शोर सर्वप्रथम पंडितों द्वारा, तत्पश्चात् उपस्थित जनसमूह द्वारा मचा दिया गया और मध्यस्थता कर रहे काशी नरेश ने समस्त नैतिकता को त्याग, खड़े होकर तालियाँ बजा दीं। अनेक गुण्डों ने स्वामी जी पर पत्थर फेंकने प्रारम्भ कर दिए। निश्चित रूप से उस कठिन घड़ी में स्वामी जी की प्राणरक्षा रघुनाथ प्रसाद कोतवाल ने, प्राणप्रण से सन्नद्ध होकर की। आर्यजन ही नहीं सम्पूर्ण मानवता रघुनाथ जी की इस कर्तव्य निष्ठा को सदैव स्मरण रखेगी।

शास्त्रार्थ का विवरण अनेकत्र उपलब्ध है, उसे हम यहाँ प्रस्तुत नहीं कर रहे, परन्तु जो लोग यह मानते हैं कि दयानन्द पराजित हुए उन्हें यह सोचना चाहिए कि प्रतिज्ञा यह थी कि पंडित वेदमंत्रों में प्रतिमा पूजन का विधान दिखायेंगे, जो काशी के पंडित न तो तब कर सके और न ही स्वामी दयानन्द के पश्चात् के पाँच प्रवासों में वे ऐसा कर पाये और तब ही क्यों आज के दिन तक कोई पंडित वेद में एक भी ऐसा मंत्र नहीं दिखा सका जिससे मूर्तिपूजा का मण्डन हो सकता हो। तो स्पष्ट है कि शास्त्रार्थ के निर्णय के बारे में जो कुछ भी लिखा गया शोर मचाया गया कि दयानन्द हार गए वह सत्य नहीं था। यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि अनेक निष्पक्ष पत्रिकाओं ने स्वामी जी का समर्थन भी किया।

यहाँ हम एक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण की भी चर्चा करना चाहेंगे। हारा हुआ व्यक्ति कभी भी सिर उठाकर अकंपित भाव से स्थित नहीं रह पाता। पाठकगण शास्त्रार्थ के पश्चात् पंडित ईश्वरसिंह जी और महर्षि दयानन्द जी की जो मुलाकात हुई उसे ध्यान में रखें। निर्मले साधु ईश्वर सिंह को बाहर जब यह शोर सुनाई दिया कि 'दयानन्द पराजित हो गए' तो उनके मन में विचार आया कि चलकर देखना चाहिए कि दयानन्द इस समय किस मनोदशा में है। जब वे वहाँ गए तो उन्होंने देखा कि विषाद की एक रेखा भी स्वामी जी के चेहरे पर नहीं थी और वे बिल्कुल सामान्य मनःस्थिति में थे। ऋषि दयानन्द की इस विशेषता, इस स्थितप्रज्ञता को देखकर उन्हीं के द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में उद्धृत भर्तृहरि जी महाराज का श्लोक ध्यान में आता है

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु, लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

और इसी के साथ इतिहास के एक ऐसे ही शास्त्रार्थ का स्मरण होता है जिसमें समान परिस्थितियों में वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् पंडित कुमारिल भट्ट बौद्धों से घिरे हुए शास्त्रार्थ कर रहे थे और वेद मत की सत्यता को प्रतिपादित कर रहे थे। उनको भी बौद्धों ने घेर रखा था, उस समय में निर्णायक महाराजा हर्षवर्द्धन बौद्धों के पक्षधर थे और उस दिन भी असत्य, छल, बल इत्यादि का आश्रय लेकर कुमारिल भट्ट के हारने का झूठा शोर मचाया गया था। अन्तर केवल एक था कुमारिल इस प्रपंच से इतने आहत हुए कि उन्होंने अपने जीवित शरीर को चिता बनाकर भस्म कर दिया, तो दूसरी ओर दयानन्द थे जो ऐसे प्रपंच से सर्वथा निर्विकार थे। न केवल निर्विकार थे परन्तु १६ नवम्बर के पश्चात् भी लगभग एक माह तक काशी में ही रहकर मूर्तिपूजा का खण्डन करते रहे और पत्रे में लिखे जिस वाक्य पर शास्त्रार्थ का समापन कर दिया गया था उसका भी उत्तर स्वामी दयानन्द ने लिखकर के प्रकाशित किया था, और वे काशी से चुपचाप भी नहीं चले गए। जाने से पूर्व उन्होंने एक विज्ञापन दिया कि 'हम वैशाख कृष्णा ११ संवत् १६३७ को काशी से चले जायेंगे किसी को संशय मिटाना हो तो मिटा ले।' क्या कोई पराजित व्यक्ति ऐसा विज्ञापन दे सकता है?

यही नहीं इस घटना के बाद भी पाँच बार महर्षि दयानन्द ने महीनों काशी प्रवास किया और वेद विहित सिद्धान्तों का मण्डन और वेद विरुद्ध मान्यताओं का खण्डन पूरे जोर-शोर से किया। एक भी पंडित की हिम्मत नहीं हुई कि इस पूरे काल में आकर के स्वामी जी का सामना कर सके। क्या कभी कोई पराजित विद्वान् ऐसा साहस कर सकता है?

मनुष्य कितना भी दम्भ प्रकट करे परन्तु अपनी आत्मा के निकट उसे सत्य का पता होता है अतएव अपराध बोध भी होता है। एक बार जब स्वामी जी के सहायक पंडित कृष्णराम इच्छाराम बालशास्त्री से अनजान बनकर मिले तो उन्होंने १६ नवम्बर के सत्य को स्वीकार भी किया और काशी के तीसरे प्रवास में स्वयं महाराजा ईश्वरी प्रसाद ने स्वामी जी को अत्यन्त सम्मान से अपने यहाँ बुलवाकर उनसे क्षमायाचना भी की।

जैसा हमने ऊपर लिखा महर्षि दयानन्द सात बार काशी गए। प्रथम बार तो वे जब घुमक्कड़ की दशा में घूम रहे थे तब गए और दूसरी बार जब उपरोक्त शास्त्रार्थ हुआ। इस शास्त्रार्थ के होने से पहले जब दयानन्द रामनगर में थे तो काशी नरेश ने उन्हें एक सौ रु. मासिक की वृत्ति देने का प्रस्ताव दिया था। वे लालच देकर के दयानन्द को डिगाना चाहते थे। इसी प्रकार वेंकटगिरि के राजा ने भी उनसे निवेदन किया कि वे मूर्तिपूजा, को व्याख्यानों में अंतिम स्थान अगर दे देते हैं तो वेदभाष्य के लिए जितनी राशि उन्हें चाहिए होगी उन्हें मिलेगी। ये दोनों लालच जो स्वामी जी को काशी में मिले, वे ठीक वैसे ही थे जैसे कि उदयपुर के महाराणा ने स्वामी जी को कहा था कि अगर वे मूर्तिपूजा का खण्डन त्याग दें तो उन्हें एकलिंग जी की गद्दी का स्वामी मान लिया जायेगा तो जो उत्तर स्वामी जी ने उदयपुर नरेश को दिया वही उत्तर उन्होंने काशी में उक्त दोनों अवसरों पर दिया। स्पष्टतः वह उत्तर नकारात्मक था।

काशी प्रवास में तीन बार श्री महाराज के प्राण-हरण का भी प्रयास किया गया। प्रथम तो जैसा ऊपर उद्धृत किया गया है १६ नवम्बर को ही काशी के गुण्डे पत्थर वर्षा कर स्वामी जी के जीवन को समाप्त कर देना चाहते थे। दूसरी बार की घटना मनोरंजक भी थी जब स्वामी जी व्याख्यान दे रहे थे तो अचानक रुक गए और बोले कि देखिये अभी थोड़ी देर में कौतूहल होने वाला है। एक व्यक्ति भोजन व पान लेकर स्वामी जी के पास आया और उन्हें ग्रहण करने का निवेदन किया। स्वामी जी ने भोजन करने से तो मना कर दिया और जब उसने ज्यादा आग्रह किया तो पान हाथ में ले, खोलकर देखने लगे। इतने में वह व्यक्ति भाग गया। वस्तुतः पान में तथा भोजन में विष मिलाया गया था। तीसरे प्रयास में दो मुसलमान पहलवानों द्वारा अगल बगल से पकड़कर स्वामी जी को गंगा में डुबाने का प्रयास किया गया पर स्वामी जी ने उल्टा उन्हीं को डुबकियाँ लगवा दीं और स्वयं पानी के नीचे-नीचे जाकर बहुत दूर निकल गए।

काशी शास्त्रार्थ के पश्चात् महर्षि दयानन्द की कीर्ति पताका दिग्दिगन्त में फहराने लगी। वैदिक यंत्रालय की स्थापना, सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण के लेखन की भूमिका तथा उद्योग इत्यादि अनेक प्रकार के कार्य काशी प्रवास के दौरान हुए परन्तु स्थानाभाव के कारण उनकी विस्तृत चर्चा नहीं करते हुए इस आलेख का समापन दो पंक्तियों के साथ करना चाहेंगे।

दयानन्द हम तेरे अहसाँ, न भूले हैं-न भूलेंगे।
हुए तुम धर्म पर बलिदान, न भूले हैं-न भूलेंगे।।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर

महाभारत में मांसभक्षण-निषेध

(सत्यार्थ सौरभ के गत अंक में हमने पंडित रामनाथ वेदालंकार जी का एक लेख दिया था जिसमें उन्होंने उन ५ वेदमंत्रों, जिनके कि बारे में कुछ तथाकथित संस्कृतज्ञों का यह दावा है कि उनमें मांसभक्षण का निर्देश है अतः वेद मांसभक्षण का समर्थन करते हैं तथा वैदिक काल में आर्य लोग मांस भक्षण करते थे, का सत्यार्थ प्रस्तुत कर यह सिद्ध किया था कि वेद में गाय या अन्य किसी भी प्राणी की हिंसा अथवा उनके मांस खाने का समर्थन तो क्या निषेध ही है। वेदों की ही भाँति रामायणकाल तथा महाभारतकाल में मांसभक्षण की बात कही जाती है। यह भी भ्रम ही है। यह तो सत्य है कि महाभारत से पूर्व से ही अवैदिक कृत्य राजा तथा प्रजा में पैर पसार चुके थे परन्तु नीचे के उद्धरणों से स्पष्ट हो जाएगा कि हिंसा तथा मांसभक्षण का महाभारत में कितने कड़े शब्दों में विरोध किया है। – अशोक आर्य, सम्पादक)

महाभारत के अनुशासन पर्व के ११५वें अध्याय में 'हिंसा और मांसभक्षण' की घोर निन्दा की गई है। मनुष्य को मन, वचन और कर्म से हिंसा न करने और मांस न खाने का आदेश दिया है।

रुपमव्यङ्गतामायुर्बुद्धिं सत्त्वं बलं स्मृतिम् ।
प्राप्तुकामैनरैर्हिंसा वर्जिता वै महात्मभिः ।। -(११५/६)

अर्थात्- जो सुन्दर रुप, पूर्णाङ्गता, पूर्ण-आयु, उत्तम बुद्धि, सत्त्व, बल और स्मरणशक्ति प्राप्त करना चाहते थे, उन महात्माओं ने हिंसा का सर्वथा त्यागकर दिया था।

न भक्षयति यो मांसं न च हन्यान्न घातयेत् ।
तन्मित्रं सर्वभूतानां मनुः स्वायम्भुवोऽब्रवीत् । -(११५/१०)

अर्थात्- स्वायम्भुव मनु का कथन है कि जो मनुष्य न मांस खाता है, न पशु-हिंसा करता और न दूसरे से ही हिंसा कराता है, वह सभी प्राणियों का मित्र होता है।

अधृष्यः सर्वभूतानां विश्वास्यः सर्वजन्तुषु ।
साधूनां सम्मतो नित्यं भवेन्मांसं विवर्जयन् ।। -(११५/११)

अर्थात्- जो मनुष्य मांस का परित्याग कर देता है, वह सब प्राणियों में आदरणीय, सब जीवों का विश्वसनीय और सदा साधुओं से सम्मानित होता है।

स्वमांसं परमांसेन यो वर्धयितुमिच्छति ।
नाति क्षुद्रतरस्तस्मात्स नृशंसतरो नरः ।। -(११६/७)

अर्थात्- जो दूसरों के मांस से अपना मांस बढ़ाना चाहता है, उससे बढ़कर नीच और निर्दयी मनुष्य दूसरा कोई नहीं है।

ददाति यजते चापि तपस्वी च भवत्यपि ।
मधुमांसनिवृत्त्येति प्राह चैवं बृहस्पतिः ।। -(११५/१३)

अर्थात्- बृहस्पतिजी का कथन है- जो मद्य और मांस त्याग देता है, वह दान देता, यज्ञ और तप करता है अर्थात् उसे इन तीनों का फल मिलता है।

एवं वै परमं धर्मं प्रशंसन्ति मनीषिणः ।
प्राणा यथाऽऽत्मनोऽभीष्टा भूतानामपि वै तथा ।। -(११५/१६)

अर्थात्- इस प्रकार मनीषी पुरुष अहिंसारुप परमधर्म की प्रशंसा करते हैं। जैसे मनुष्य को अपने प्राण प्रिय होते हैं, वैसे ही सभी प्राणियों को अपने-अपने प्राण प्रिय जान पड़ते हैं।

अहिंसा परमो धर्मस्तथाहिंसा परं तपः ।
अहिंसा परमं सत्यं यतो धर्मः प्रवर्तते ।। -(११५/२२३)

अर्थात्- अहिंसा परम धर्म है, अहिंसा परम तप है और अहिंसा परम सत्य है; क्योंकि उसी से धर्म की प्रवृत्ति होती है।

न हि मांसं तृणात् काष्ठादुपलाद् वापि जायते।
हत्वा जन्तुं ततो मांसं तस्माद् दोषस्तु भक्षणे॥ -(११५/२४)

अर्थात्- मांस तृण से, काष्ठ (लकड़ी) से अथवा पत्थर से पैदा नहीं होता, वह प्राणी की हत्या करने पर ही उपलब्ध होता है; अतः उसके खाने में महान् दोष है।

कान्तारेष्वथ घोरेषु दुर्गेषु गहनेषु च।
अमांसभक्षणे राजन् भयमन्यैर्न गच्छति॥ -(११५/२६-२७)

अर्थात्- हे राजन्! जो मनुष्य मांस नहीं खाता वह संकटपूर्ण स्थानों, भयंकर दुर्गों और गहन वनों में भी दूसरों से नहीं डरता है।

धन्यं यशस्यमायुष्यं स्वर्ग्यं स्वस्त्ययनं महत्।
मांसस्याभक्षणं प्राहुर्नियताः परमर्षयः॥ -(११५/३५)

अर्थात्- नियमपरायण महर्षियों ने मांसभक्षण के त्याग को ही धन, यश, दीर्घायु और स्वर्ग=सुख-प्राप्ति का प्रधान उपाय तथा परमकल्याण का साधन बताया है।

अखादन्ननुमोदंश्च भावदोषेण मानवः।
योऽनुमोदति हन्यन्तं सोऽपि दोषेण लिप्यते॥ -(११५/३६)

अर्थात्- जो स्वयं तो मांस नहीं खाता, परन्तु खाने वाले का अनुमोदन करता है, वह भी भाव-दोष के कारण मांसभक्षण

के पाप का भागी होता है। इसी प्रकार जो मारनेवाले का अनुमोदन करता है, वह भी हिंसा के दोष से लिप्त होता है।

हिरण्यदानैर्गोदानैर्भूमिदानैश्च सर्वशः।
मांसस्याभक्षणे धर्मो विशिष्ट इति नः श्रुतिः॥ -(११५/४१)

अर्थात्- सुवर्णदान, गोदान और भूमिदान करने से जो धर्म प्राप्त होता है, मांसभक्षण न करने से उसकी अपेक्षा भी विशिष्ट धर्म की प्राप्ति होती है, ऐसा सुना जाता है।

इज्यायज्ञश्रुतिकृतैर्यो मार्गैरबुधोऽधमः।
हन्याज्जन्तून् मांसगृध्नुः स वै नरकभाङ्नरः॥ -(११५/४३)

अर्थात्- जो मांस लोभी मूर्ख एवम् अधम मनुष्य यज्ञ-याग आदि वैदिक मार्गों के नाम पर प्राणियों की हिंसा करता है, वह नरकगामी होता है।

यहाँ स्पष्टतः वैदिक कर्मकांड के नाम पर हिंसा का निषेध किया गया है।

नात्मनोऽस्ति प्रियतरः पृथिवीमनुसृत्य ह।
तस्मात्प्राणिषु सर्वेषु दयावानत्मवान् भवेत्॥ -(११६/२२)

अर्थात् इस भूमण्डल पर अपने आत्मा से बढ़कर कोई प्रिय पदार्थ नहीं है, अतः मनुष्य को चाहिए कि प्राणियों पर दया करे और सबको अपनी ही आत्मा समझे।

मां स भक्षयते यस्माद् भक्षयिष्ये तमप्यहम्।
एतन्मांसस्य मांसत्वमनुबद्ध्यस्व भारत॥ -(११६/२५)

अर्थात्- हे भारत! (वध्य प्राणी कहता है-) आज मुझे वह खाता है, तो कभी मैं भी उसे खाऊँगा- यही मांस का मांसत्व है- यही मांस शब्द का तात्पर्य है।

विशेष निवेदन

सत्यार्थ प्रकाश के निर्माण में किए जा रहे अनथक परिश्रम का उत्साह तब फीका पड़ जाता है जब हमारे माननीय सदस्यों की शिकायत आती है कि उन्हें 'सत्यार्थ सौरभ' नहीं मिला। हमने अनेक बार पोस्ट ऑफिस के अधिकारियों से इस समस्या के समाधान हेतु बात की है। उनके सुझावों के आधार पर एक प्रार्थना सत्यार्थ सौरभ के सभी सदस्यों से करना चाहते हैं कि वे निम्न नम्बरों पर चाही गई सूचना अविलम्ब वाट्सअप या एस.एम.एस. करने का श्रम करें।
मोबाइल नम्बर - 9314535379, 9829063110, 7976271159
आपको एक मिनिट लगेगा पर हो सकता है कि समस्या का समाधान हो जाये। सूचना आपको भेजनी है:-

1. नाम-
2. सदस्य संख्या/क्रम संख्या
3. मोबाइल नं.
4. पोस्ट पते के पास यदि कोई लेण्डमार्क हो तो-
5. एकदम सही पिन कोड। हम आपके आभारी रहेंगे।

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आज हमने नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की जीवनी की दर्शक दीर्घा का अवलोकन किया। आज हमें इस बात का ज्ञान हुआ कि हिन्दू संस्कृति के मूल ग्रन्थों में पोंगा पण्डितों ने स्वयं के ऊल-जुलूल विचार घुसाकर ग्रन्थों की खिचड़ी बनाकर रख दी। भारतीय जनता को गुमराह करके रख दिया। हमने इस भव्य चित्रदीर्घा के माध्यम से वेदों के बारे में स्पष्ट ज्ञान की बातें सुनीं। आज हमें असल में ज्ञात हुआ कि स्वामी जी ने वेदों का सार सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है-यही सत्य ज्ञान है। आज हम धन्य हुए।

- भूरा लाल सालवी एवं श्रीमती इन्दु जुनेजा

यहाँ पर आकर यहाँ के संयोजन को देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। विशेषकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के उस कक्ष को देखकर जहाँ उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ की रचना की। उस कक्ष में निश्चित ही देवत्व की भावना महसूस होती है। यहाँ की जो व्यवस्था है वह निश्चित ही आर्य समाज एवं सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

- अभिषेक त्रिवेदी, बांसवाड़ा

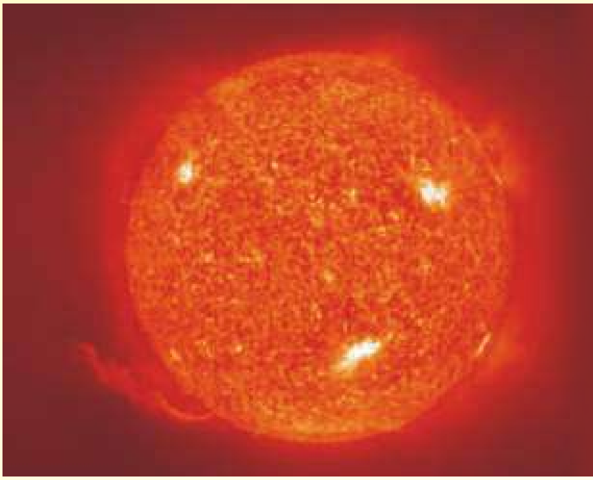

क्या सूर्य पर जीवन संभव है?

१००% गारण्टी देता हूँ पूरा लेख पढ़कर मान जाओगे कि सूर्य पर जीवन संभव है-

मनुष्य उसे कहा जाता है जिसके अन्दर बुद्धि हो। अगर चींटी के अन्दर भी बुद्धि है तो वह मनुष्य कहलाएगी।

संस्कृत में मनुष्य का अर्थ है- **'मत्वा कर्माणिसीव्यति'** अर्थात् जो मननयुक्त होकर कर्म करे वही मनुष्य है। भले ही उसके शरीर की आकृति किसी भी रूप में हो सकती है, लेकिन बुद्धि ही उसे मनुष्य बनाती है। Extra Terrestrial Life के ऊपर खोज करने वाले 'फैंक ड्रेक' जिन्होंने 'ड्रेक समीकरण' दिया है, उनका मानना है कि neutron star पर भी जीवन संभव है। ब्लैकहोल को मानने वाले वैज्ञानिक भी यही मानते हैं कि ब्लैकहोल के Event Horizon के अन्दर कुछ ग्रहों पर भी जीवन संभव है। इस लेख में हम अनेकों वैज्ञानिकों की खोज से यह विश्लेषण करेंगे कि क्या सूर्य पर भी जीवन संभव हो सकता है ??

बुद्धिमत्ता से युक्त जीवन ही मनुष्य है, तब प्रश्न है कि क्या मनुष्य का होना किसी अन्य ग्रह या तारे पर भी सम्भव है? सूर्य जिसकी सतह का तापमान ६००० केल्विन है। जिसका

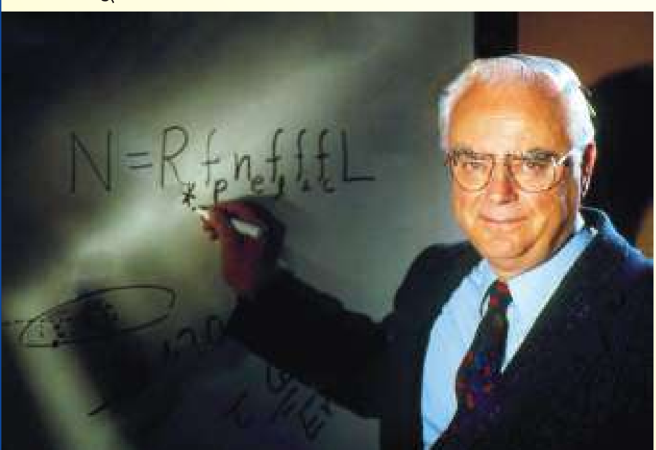

उच्चतम तापमान 21million केल्विन है। क्या वहाँ जीवन सम्भव है? वहाँ जीवन के बारे में कोई कल्पना भी नही कर सकता। अगर आपके मन में यह विचार आ रहे हैं तो इस लेख को पूरा पढ़ें, आपकी यह सोच बदल जायेगी, क्योंकि मैं आपको कुछ ऐसी वैज्ञानिक खोजों के जरिये ये सिद्ध करके बताऊँगा कि ऐसा सम्भव है - परग्रही या एक्स्ट्रा टेरेस्ट्रियल जीवन। २१वीं शताब्दी में वैज्ञानिकों ने ऐसी कई खोजें की हैं।

२००५ में Heather Smith ने एक रिसर्च पेपर प्रस्तुत किया। इसमें उनका मानना था कि मीथेन आधारित जीवन सम्भव है जिसमें कोई जीव हाईड्रोजन, एसिटिलीन, इथेन को श्वांस के रूप में लेगा और कार्बन डाइऑक्साइड की जगह मीथेन को श्वांस के रूप में छोड़ेगा। इस प्रकार का जीवन शनि ग्रह के चन्द्रमा 'टाईटन' जैसे अत्यधिक ठण्डे इलाके में हो सकता है।

NASA के एस्ट्रोकेमिस्ट 'मैक्स बर्नस्टीन' के अनुसार हाइड्रोजन से भरपूर और ऑक्सीजन की कमी वाले ग्रह पर सिलिकोन आधारित जीवन सम्भव है।

कुछ अन्य वैज्ञानिकों का मानना है कि अत्यधिक ठण्डे इलाके में 'बोरोन' आधारित जीवन सम्भव है। यानी कि ऐसे जीवों के शरीर 'बोरोन' आधारित होंगे। २०१२ में England Belgium और Denmark की वैज्ञानिक टीम ने पहला 'Xenon Nucleic Acid' तैयार किया यानी XNA जो कि एक Synthetic Nucleic है, जिसकी संरचना DNA और RNA के समान है। यानी कि किसी भी जीव के शरीर

की Fundamental संरचना DNA और RNA किसी दूसरे पदार्थ से भी बनी हो सकती हैं।

१९७१ में एक वैज्ञानिक Robert A Freitas ने एक थियरी दी कि जीवों का Metabolism चार प्रकार के बलों पर आधारित है।

वे बल हैं -

1. Strong Nuclear Force
2. Electromagnetic Force
3. Weak Nuclei Force
4. Gravitational Force

हमारी पृथ्वी पर electromagnetic life पायी जाती है। Strong Nuclear Force पर आधारित Chromo dynamic life बहुत कम दूरी तक सम्भव हो सकती है। यानी इस प्रकार के जीव काफी छोटे होंगे। इन्होंने बताया कि इनके रहने लायक वातावरण Neutron Star पर सम्भव है। Neutron Star अंतरिक्ष में एक ऐसे पदार्थ हैं जिनका घनत्व बहुत ज्यादा होता है, इतना ज्यादा कि 10-12 km के गोलाकार आयतन (Spherical volume) में हमारे सूर्य जितना द्रव्यमान भरा हो। ये तारे लगभग इतने ही आकार के होते हैं। लेकिन इनका गुरुत्वाकर्षण बल हमारी पृथ्वी से 100billion गुना अधिक होता है। ये वैज्ञानिक इस प्रकार के तारे पर भी जीव होना मानते हैं। इनका यह भी मानना है कि कुछ जीव ऐसे भी सम्भव हैं जिन्हें 'Gravitational creature' नाम दिया गया है, जिनका खाना सीधे उर्जा हो यानी उर्जा को सोख लेते हों।

Stephen Hawking कहते हैं कि 'युरोपा' नामक उपग्रह पर ऐसे जीव सम्भव हैं जो कि गैस से बने हों, और ये जीव सीधे विद्युत् को अपना भोजन बनाने वाले हो सकते हैं।

हमारी धरती पर 'underwater volcanos' में भी जीवन पाया जाता है यानी कि उच्च तापमान के उबलते जल में भी कई जीव रहते हैं। वैज्ञानिकों ने यहाँ शार्क मछली को भी

देखा जिसे वैज्ञानिक असम्भव मान रहे थे। वैज्ञानिकों के अनुसार इतने उच्च तापमान और दबाव वाले स्थान पर छोटे और सूक्ष्म जीव तो सम्भव हैं लेकिन शार्क मछली नहीं। परन्तु वैज्ञानिकों ने शार्क को वहाँ पाया, इसे Volcanic life भी कहा जाता है।

हमारी धरती पर एक जीव ऐसा भी है जो अलग-अलग प्रकार के वातावरण, तापमान और दबाव में भी रह सकता है। इसका नाम है- 'टार्डीग्रेड', ये जीव ०.३६-०.५mm के होते हैं। इस तरह ये जीव जीवन के बारे में हमारी धारणाओं को चुनौती देते हैं, और ब्रह्माण्ड में जीवन की सम्भावनाओं के विषय में हमारी सोच को एक विस्तार देते हैं।

वैज्ञानिकों की खोज से ये बात साफ है कि ब्रह्माण्ड में परग्रहियों का शरीर किसी भी तत्त्व या पदार्थ का बना हो सकता है। वे किसी भी प्रकार के वातावरण में सम्भव हो सकते हैं और ये जीव काफी सूक्ष्म हो सकते हैं। तो मित्रों

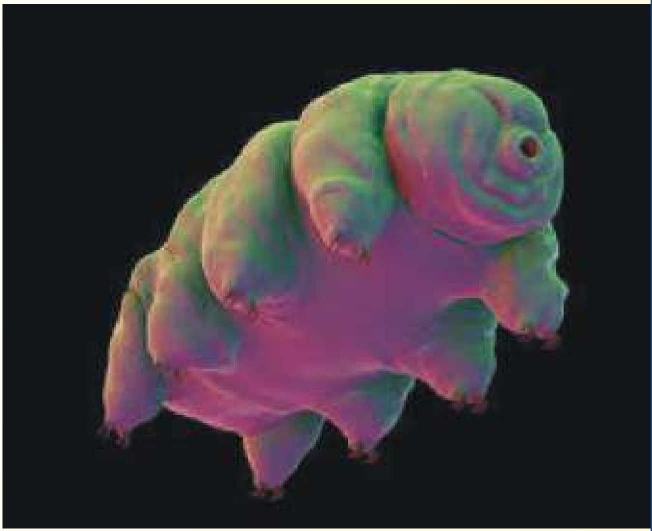

इसी तरह सूर्य पर भी जीवन सम्भव है, लेकिन सूर्य के इतने अधिक तापमान को देखके लगता है कि ये असंभव है, तो मैं आपको बता दूँ कि एक वैज्ञानिक neutron star में जीवन का होना मानते हैं, और इस स्टार का तापमान सूर्य से भी करोड़ों गुणा ज्यादा होता है। लेकिन प्रश्न उठता है कि इतने उच्च तापमान में जीवन कैसे होगा? इसका उत्तर मैं वैदिक विज्ञान से दूँगा।

आप जानते हैं कि हमारा शरीर ५ तत्वों से मिलकर बना है, ये ५ तत्त्व हैं- अग्नि, जल, पृथ्वी, वायु और आकाश। हमारी धरती पर रहने वाले शरीर को 'पार्थिव शरीर' कहा जाता है क्योंकि इसमें पृथ्वी तत्त्व ज्यादा मात्रा में होता है, और बाकी कम होते हैं। सूर्य पर रहने वाले जीवों का शरीर इन पाँचों

तत्वों से बना होगा या फिर ५ से कम भी तत्त्व हो सकते हैं, लेकिन उसमें अग्नि या वायु तत्त्व की मात्रा के अधिक होने से वे इतने उच्च तापमान में रह सकते हैं। इसी तरह इन पाँचों तत्त्वों की मात्रा में परिवर्तन से बहुत सारे प्रकार के शरीर सम्भव हैं जो अलग-अलग वातावरण में रह सकें। तो ऐसे ही सूर्य पर भी जीवन सम्भव है।

शास्त्रों में बताया है- 'सूर्यादिलोके तेजस शरीरः' यानी सूर्य आदि लोकों में तेज तत्त्व प्रधान शरीर होता है। यानी सूर्य में अग्नि तत्त्व से निर्मित शरीर होता है, अर्थात् 'आग्नेय शरीर' होता है। इसको और अधिक समझने के लिए ५ तत्वों को समझना जरुरी है। ५ तत्वों में वायु का तात्पर्य हवा नही होता, पृथ्वी का तात्पर्य ठोस या जल का तात्पर्य तरल नही होता, इसके लिए हम आपको एक नया लेख प्रस्तुत करेंगे। इसी तरह ब्रह्माण्ड में हर जगह जीवन सम्भव है, ये जरुरी नहीं कि यदि ऐसे जीवन को देख न पाएँ तो वो मौजूद नहीं! उदाहरण के लिए हम सूक्ष्म जीवों को देख नही पाते, लेकिन वे मौजूद हैं। अगर किसी ने पानी में रहने वाले जीवों को नही देखा तो वो देखकर आश्चर्यचकित हो जायेगा कि पानी में भी जीवन है और जब हमारी धरती पर ही Volcanic life है, तो सूर्य पर भी जीवन सूक्ष्म जीवों के रूप में सम्भव हो सकता है। इस तरह अलग-अलग तत्वों की अधिकता से अलग-अलग शरीर सम्भव हैं। हमारे दर्शन शास्त्र में बताया गया है कि जिस तरह इस लोक में भी कर्मों का फल मिलता है उसी तरह अन्य लोकों में आग्नेय शरीर वाले जीव भी कर्म के बंधन में आते हैं। इससे सिद्ध होता है कि ब्रह्माण्ड में अनेकों जगह जीवन संभव है। इन जानकारियों को जानने के बाद आपको क्या लगता है, क्या सूर्य पर भी जीवन सम्भव है?

{प्रस्तुत लेख में भी लेखक ने सूर्य पर जीवन की संभावना को व्यक्तकिया है। महर्षिवर की उद्घोषणा की ओर एक कदम और विचारोत्तेजेक लेख होने के कारण हम सत्यार्थ सौरभ के पाठकों के विचार के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।}

- सूर्यांश आर्य (अन्तर्जाल)

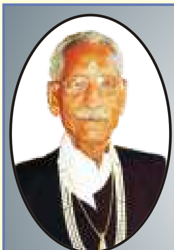

स्नेह-प्रेम की पूंजी, से ही होता है उत्कर्ष। यही है सुख का साधन, देता हर पल हर्ष।।

सत्यार्थ सौरभ घर-घर पहुँचावें।

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष-न्यास

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यॉंमार) स्मृति पुरस्कार

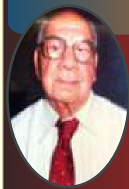

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- ☞ न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- ☞ हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- ☞ अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- ☞ लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- ☞ आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- ☞ विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- ☞ वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- ☞ पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- ☞ वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- ☞ पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

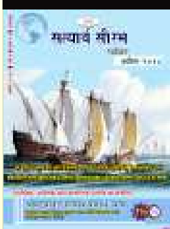

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

जहाँ भारत के शिक्षित हिन्दुओं में अकबर की छवि उदार व कुशल बादशाह की है वहीं पाकिस्तान में उसके प्रति घृणा का भाव है। दरअसल अकबर आध्यात्मिकता की ओर झुकाव के कारण इस्लाम से दूर होने लगा था। उसने अपने दरबार में मजहबी-वैचारिक विमर्श में इस्लाम यहाँ तक कि पैगम्बर मुहम्मद पर भी प्रश्न उठाने की छूट दे दी थी।

योगी आदित्यनाथ ने पिछले दिनों दो बार जोर देकर कहा कि भारतवासियों के लिए अकबर नहीं, बल्कि महाराणा प्रताप महान् थे। इस पर यहाँ के प्रभावी बुद्धिजीवी समाज में प्रतिक्रिया हुई। कारण यह है कि अकबर बनाम प्रताप हमारी राष्ट्रीय मानसिकता का एक बुनियादी संघर्ष-बिन्दु है, इसीलिए इस पर सदैव विवाद होता है।

मजे की बात यह है कि भारत और पाकिस्तान में अकबर की छवि प्रायः उलटी है। भारत में शिक्षित हिन्दुओं में अकबर की छवि उदार, कुशल बादशाह की है जबकि पाकिस्तान में अकबर के प्रति घृणा-सा भाव है, कि उसने इस्लाम के प्रसार को बाधित किया। यहाँ भी, बड़े कांग्रेसी नेता और नेहरू के प्रधानमंत्रित्वकाल में भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद ने कहा था कि अकबर ने भारत से इस्लाम को खत्म कर दिया। प्रसिद्ध इतिहासकार आई.एच. कुरैशी भी अकबर को काफिर मानते थे। वैसे, पाकिस्तान और भारत में अकबर की इन दो उलटी छवियों में एक सत्य समान है। वस्तुतः वही सामाजिक और तात्विक दृष्टि से रोचक भी है। यह सही है कि महान् हिन्दू नायक हेमचन्द्र को घायल अवस्था में अपने हाथों से कत्ल करने वाला १३ वर्षीय

महान् था या नहीं, मगर क्या अकबर मुसलमान था?

हालाँकि महाराणा प्रताप पर अधिक विवाद नहीं है। चाहे दशकों से नेहरूवादी-मार्क्सवादी जमात ने प्रचार किया कि प्रताप तो स्थानीय राजा थे, जो अपनी गद्दी के लिए अकबर से लड़ते रहे। किन्तु हिन्दू स्मृति में राणा प्रताप और शिवाजी का विशिष्ट अद्वितीय स्थान है, जिन्होंने इस्लामी आक्रमणकारियों के विरुद्ध हिन्दू संघर्ष को जिन्दा रखा, और अंततः जिससे इस्लामी साम्राज्यवाद हारा। महाराणा प्रताप की ध्वजा पर सनातन प्रतिज्ञा फहराती थी 'जो दृढ़ राखहीं धरम को, तौ राखहिं करतार।' अतः उन की महानता स्थाई है। विवाद अकबर पर है। क्या वह महान् भारतीय था या कि विदेशी इस्लामी आक्रमणकारी? क्या उसने यहाँ इस्लाम का साम्राज्य बढ़ाया या इस्लाम को किनारे कर केवल सत्ता की राजनीति की? ये बड़े विवादी सवाल हैं।

अकबर एक कट्टर जिहादी शासक बना। अपने शासन के पहले २३ वर्षों तक उसने जो किया उस से यहाँ वह महमूद गजनवी, शहाबुद्दीन घूरी, मुहम्मद घूरी और अलाउद्दीन खिलजी की पंक्ति में ही आता है। बाहरी मुसलमान सैनिकों के बल पर उसने भारत के बड़े भू-भाग पर कब्जा किया। अपने को 'गाजी' कहते हुए, तैमूरी वंशज होने का उसे बड़ा गर्व था। मेवाड़ और गोंडवाना राज्यों में उसने जो किया, वह वीभत्स जिहाद ही था।

अकबर लम्बे समय तक मोइनुद्दीन चिश्ती का अंध-भक्त रहा, जो हिन्दू धर्म-समाज पर इस्लामी युद्ध का बड़ा प्रतीक था। १५६८ ई. में चित्तौड़गढ़ पर जीत के बाद अकबर ने उसी चिश्ती दरगाह-अड्डे से 'फतहनामा-ए-चित्तौड़' जारी किया था। उस के हर वाक्य से जिहादी जुनून टपकता है।

उस युद्ध में ८ हजार राजपूत स्त्रियों ने जौहर कर प्राण दिए, और अकबर ने राजपूत सैनिकों के अलावा ३० हजार सामान्य नागरिकों का भी कत्ल किया। सभी मृत पुरुषों के जनेऊ जमा कर उन्हें तौला गया, जिसका वजन साढ़े चौहत्तर मन था। यह भी केवल एक बार में, एक स्थान पर! आज भी राजस्थान में '७४' का तिलक-नुमा चिह्न किसी वचन पर पवित्र मुहर जैसा इस्तेमाल होता है, कि जो इस वचन को तोड़ेगा, उसे बड़ा पाप लगेगा।

अकबर के सूबेदारों ने उत्तर-पश्चिम भारत में हिन्दू मंदिरों का बेशुमार विध्वंस किया। इनमें कांगड़ा, नगरकोट आदि के प्रसिद्ध मंदिर शामिल थे। अकबर ने अपने शासन में शरीयत लागू करने के लिए मुल्लों के विशेष पद भी बनाये। पूरी दुनिया से महत्वाकांक्षी मुसलमान उसके पास आते थे, और उन्हें पद, जिम्मेदारी आदि मिलती थी। पहले तो मजहबी मामले में अकबर इतना कट्टर था, कि हिन्दुओं की कौन कहे, कट्टर-सुन्नी के सिवा अन्य मुस्लिम संप्रदायों के प्रति भी वह असहिष्णु था।

दूसरी ओर, यह भी सही है कि अकबर के स्वभाव में एक चिंतनशीलता, तर्कवादिता और लीक की परवाह न करने वाली साहसिक प्रवृत्ति थी। इसीलिए, जैसे ही उस की सत्ता विस्तृत और सुदृढ़ हो गई, उसने अपने प्रिय विषय मजहब-चिंतन पर समय देना शुरू किया। यह १५७४ ई. के लगभग हुआ, जब अकबर ने राजधानी फतेहपुर सीकरी में इस्लाम का बाकायदा अध्ययन शुरू किया। उस की मूल

इच्छा इस्लाम को और मजबूत करने की ही थी। इसी इरादे से उस ने विभिन्न धर्म-ज्ञानियों, संतों को बुलाकर अपने चिश्ती सूफियों और उस समय के नामी सुन्नी उलेमाओं के साथ शास्त्रार्थ-सा कराना शुरू किया। इसके लिए उसने एक विशेष 'इबादतखाना' और उसके सामने 'अनूप तालाब' बनवाया। अनोखी बात है कि पहली बार अकबर ने यह संस्कृत नामकरण किया।

'इबादतखाना' उन्हीं सूफियों, आलिमों, ज्ञानियों के साथ अकबर के गहन ज्ञान-विमर्श का स्थान था। उस जगह कई वर्षों तक अकबर की मौजूदगी में जो विचार-विमर्श हुए, उनके काफी विवरण अलग-अलग किन्तु प्रत्यक्ष स्रोतों से उपलब्ध हैं। जैसे- पुर्तगाली, ईसाई पादरी, गुजरात से निमंत्रित पारसी विद्वान् दस्तूर मेहरजी और अकबरी दरबार का मुल्ला बदायूँनी। इन तीनों के लेखन से यह प्रामाणिक जानकारी मिलती है कि समय के साथ अकबर ने महसूस किया कि जिस मजहब पर उसे इतना अंधविश्वास रहा था, वह वास्तव में दर्शन, चिन्तन और ज्ञान-विज्ञान से खाली-सा है।

अबुल फजल की प्रसिद्ध पुस्तक अकबरनामा के अनुसार अकबर ने कहा, 'अनेक हिन्दू विश्वासियों को हमारा मजहब अपनाने के लिए विवश किया था। अब जबकि हमारी आत्मा को सच्चाई की रोशनी मिली है, यह साफ हो गया है कि विरोधों से भरी इस कष्टप्रद दुनिया में, जहाँ परत-दर-परत नासमझी और घमंड भरा पड़ा है, कोई भी कदम बिना सबूत के नहीं उठाया जा सकता। और वही मत लाभदायक है जिसे विवेक ने स्वीकृत किया हो। सुल्तान के डर से किसी मत को बार-बार दुहराना, चमड़ी का कोई हिस्सा काटकर अलग कर देना (खतना) और अपनी (सिर की) हड्डी के सिरे को जमीन से छुआना (सिजदा करना), यह सब कोई परवरदिगार की ओर जाना नहीं है।'

संभवतः अपने ही पुराने जिहादी अतीत पर अफसोस जताते हुए अकबर ने कहा था कि- जानवर भी जान-बूझकर कोई हिंसा नहीं करते। पर 'बुराई की ओर मनुष्य का झुकाव उस के आवेशों और कामुकता को विकृति के नए-नए रास्ते सुझाता है। उसे खून-खराबा करना और दूसरों को कष्ट देने को मजहबी आदेश समझना सिखाता है।' यह परोक्ष, मगर लगभग खुले रूप से इस्लाम की ही आलोचना थी।

अतः कहा जा सकता है कि चूँकि अकबर में आध्यात्मिक भूख थी, इसलिए अनायास वह इस्लाम से दूर होने लगा। उसका इरादा ऐसा नहीं था। पर ईश्वर और आत्मा के प्रति खोजी मानसिकता ने उसे जड़-सूत्री मतवादिता से स्वतः वितृष्ण कर दिया। इसीलिए उस ने मजहबी-वैचारिक विमर्श में इस्लाम की मान्यताओं पर और स्वयं पैगम्बर मुहम्मद पर भी प्रश्न उठाने की छूट दी।

एक बार अकबर के दरबार में किसी आमंत्रित दार्शनिक ने पैगम्बर-वाद के सिद्धान्त की ही कड़ी आलोचना की। उसने कहा कि जब पैगम्बर भी एक मनुष्य थे, तो मनुष्यों को अपने जैसे ही दूसरे मनुष्य के सामने झुकाना बहुत बड़ी बुराई है। क्योंकि किसी भी मनुष्य में मनुष्य वाली कमजोरियाँ कमोबेश

होंगी ही। फिर उस ने पैगम्बर मुहम्मद की जीवनी से ऐसी अनेक कमियों का उल्लेख करते हुए पूछा, 'जहांपनाह! तब किस विज्ञान के आधार पर ऐसे व्यक्ति के आदेश मानना जरूरी समझा जाए?'

कहना न होगा कि अकबर के दरबार में ऐसा खुला मजहबी विचार-विमर्श इस्लाम की सत्ता और प्रवृत्ति के विरुद्ध ही था। यही नहीं, व्यावहारिक क्षेत्र में भी, अकबर ने हिन्दुओं से जबरन कन्वर्ट कराए गए मुसलमानों को फिर से अपने पुराने, हिन्दू धर्म में जाने की अनुमति दे दी। ईसाई पादरियों का स्वागत करते हुए अकबर जीसस और मैरी की प्रतिमाओं को इस प्रेम से गले लगाता था कि पादरियों को लगता कि वह ईसाई बनने के लिए तैयार है। उस ने लाहौर में एक चर्च बनाने और उसका खर्च उठाने की भी मंजूरी दी थी। उसने अपने राज्य में गो-मांस खाने का भी निषेध कर दिया। कभी-कभी अकबर हिन्दू या ईसाई (पुर्तगाली) पोशाक आदि भी पहनता था। यह सभी कदम दर्शाते हैं कि धीरे-धीरे वह इस्लाम के मूल आदेशों, निर्देशों और सिद्धान्तों को कतई खारिज कर चुका था।

संभवतः इसीलिए, उसने लगभग १५८२ ई. में एक नये मजहब की ही घोषणा कर डाली, जिसे 'दीन-ए-इलाही' का

नाम दिया गया। निस्संदेह, यह अपने आप इस्लाम से हटने का अप्रत्यक्ष संकेत ही था। चाहे उसने राजनीतिक, व्यावहारिक कारणों से ऐसी कोई घोषणा नहीं की थी। पर यह तो तब भी और आज भी साफ है कि कोई मुसलमान किसी नए मजहब की घोषणा करे, तो इस्लामी मतवेत्ता उससे क्या समझेंगे। बदायूंनी ने लिखा भी है कि मिर्जा जानी जैसे जिन मुस्लिम सूबेदारों ने दीन-ए-इलाही को अपनाने की घोषणा की, उन्होंने साथ ही इस्लाम छोड़ने की भी घोषणा की थी।

निस्संदेह, दीन-ए-मुहम्मद (पैगम्बर मुहम्मद का मजहब) और दीन-ए-इलाही (ईश्वर का मजहब) एक ही चीज नहीं हो सकती थी। वरना, इसकी घोषणा की जरूरत ही न होती। हालाँकि भारत में उदारवादी, वामपंथी और इस्लामी इतिहासकारों ने इस अत्यन्त गंभीर बिन्दु की लीपा-पोती करने की कोशिश की है। उन्होंने इसे अकबर का चतुराई भरा राजनीतिक कदम बताया है, ताकि उसे यहाँ तमाम विभेदों से ऊपर उठकर एक अनूठे शासक होने का खिताब मिले। कुछ ने इसे अकबर की निजी महत्वाकांक्षा बताया है, कि वह खुद पैगम्बर बनने की लालसा पालने लगा था, आदि। पर कारण जो भी रहा हो, पैगम्बर मुहम्मद, कुरान और हदीस, यानी पैगम्बर के वचन और काम के उदाहरण के सिवा किसी चीज को महत्व तक देना इस्लाम-विरुद्ध है। इसे देखते हुए अकबर ने तो सीधे-सीधे एक नये मजहब की ही घोषणा कर डाली थी! यह सीधे-सीधे इस्लाम को ठुकराने का सुविचारित कदम था। चाहे इस का कारण कुछ भी रहा हो।

सभी स्थितियों और साक्ष्यों को देखते हुए यह सच प्रतीत होता है कि आध्यात्मिक और खोजी स्वभाव के कारण अकबर ने अपनी ओर से भरपूर वैचारिक पड़ताल के बाद इस्लाम से छुट्टी कर ली! उसने हर किसी को अपने-अपने श्रद्धा और विश्वास के अनुसार किसी भी पंथ को अपनाने, छोड़ने और अपने पांथिक स्थान, मंदिर, चर्च, सिनेगाग, मौन-स्तम्भ आदि बनाने की अनुमति दे दी। बदायूंनी के अनुसार, इस सम्बन्ध में एक राजकीय आदेश जारी हुआ था। यह सब इस्लाम-विरुद्ध था।

किन्तु उस समय पूरे विश्व में सब से ताकतवर मुस्लिम शासक होने के कारण कोई मुल्ला, इमाम या दूसरे मुस्लिम शासक, यहाँ तक कि खलीफा भी, अकबर का कुछ बिगाड़ नहीं सकते थे। मुल्ला बदायूंनी ने अपनी गोपनीय डायरी में बेहद कटु होकर लिखा है कि बादशाह काफिर हो गया है, चाहे कोई कुछ बोल नहीं सकता। यही राय उस समय के अन्य मुल्लाओं, आलिमों, सूफियों की भी थी। बदायूंनी ने यह भी लिखा है कि खुले पांथिक और तात्विक विचार-विमर्श में हिन्दू पंडितों के सामने कोई मौलाना टिक नहीं पाता था।

इसी बीच, आजीवन स्वस्थ और बलिष्ठ अकबर की मात्र ६३ वर्ष की आयु में ही आकस्मिक मौत हो गई। कई विवरणों में उसे जहर देने की बात मिलती है। यहाँ तमाम मुस्लिम शासकों का इतिहास देखते हुए यह सामान्य बात ही थी। मध्यकालीन भारत में शासन करने वाले तमाम मुस्लिम सुल्तानों, बादशाहों, सूबेदारों आदि में तीन चौथाई से अधिक की अस्वाभाविक मौत या हत्या आदि ही हुई थी। उस में

अकबर भी रहा हो, तो यह कोई बड़ी बात नहीं थी। हालाँकि, यदि यह सच हो तो इस का कारण तख्त के लिए शहजादे सलीम का षड्यंत्र भी सम्भव है, जो वह पहले भी कई बार कर चुका था। पर निस्संदेह, कट्टर मुल्ला, सूफी

और उलेमा भी अकबर से बेहद नाराज थे। यदि अकबर की अस्वाभाविक मौत हुई, तो कारण ये लोग भी रहे हो सकते थे।

यह संयोग नहीं कि जिस 'इबादतखाने' और 'अनूप तालाब' के बारे में उस जमाने के अनेक विवरण तथा चित्रकारियाँ मिलती हैं, आज फतेहपुर सीकरी में इन दोनों का ही कोई नामो-निशान नहीं है! अकबर के बाद मुल्लों ने उसे 'कुफ्र' की निशानी मानकर बिल्कुल नष्ट करवा दिया। यह अकबर के शासन के उत्तरार्ध के वैचारिक इतिहास पर कोलतार पोतने का ही अंग था। संयोगवश वे लोग मुल्ला बदायूंनी की लिखी गोपनीय डायरी 'मुन्तखाबात तवारीख' की सभी प्रतियों को खत्म न कर सके, जो बहुत बाद में जाकर उजागर हुईं थीं। तब तक उस की अनेक प्रतियाँ, प्रतिलिपियाँ बन कर जहाँ-तहाँ चली गई थीं।

उस जमाने के हिसाब से १५७९ ई. से १६०५ ई. कोई छोटी अवधि नहीं है, जिसे अकबर के इस्लाम से हट जाने का काल कहा जा सकता था। इन २६ वर्षों में अकबर ने जो सामाजिक, राजनीतिक, मजहबी व्यवहार किया, जो कहा-सुना, उस के विश्लेषण के बजाए यहाँ उन सबको छिपाने का ही काम हुआ। ताकि इस गंभीर सत्य पर पर्दा पड़ा रहे कि भारत के तमाम इस्लामी शासकों में जो सब से प्रसिद्ध हुआ, वह बाद में मुसलमान ही नहीं रहा! अकबर से कई बार मिले गोवा चर्च के फादर 'फादर जेवियर' ने लिखा है कि अकबर इस्लाम छोड़कर कोई देशी संप्रदाय (जेन्टाइल सेक्ट) स्वीकार कर चुका था। पुर्तगाली जेसुइटों ने भी अलग-अलग बातें लिखी हैं। किसी के अनुसार, अकबर ईसाई हो गया था, तो किसी के अनुसार वह हिन्दू बन गया था। एक ने लिखा है कि अकबर दिन में चार बार श्रद्धापूर्वक सूर्य की उपासना करता था। वस्तुतः अनेक विवरणों में अकबर के इस्लाम छोड़ देने की आशंका या दावा मिलता है। एक बार अपने बेटे को लिखे पत्र में अकबर ने कर्म-फल और आत्मा के पुनर्जन्म सिद्धान्त को बिल्कुल तर्कपूर्ण और विश्वसनीय बताया था। अकबरनामा के अनुसार, जब शहजादे मुराद को मालवा का शासक बनाया गया, तो उसने विभिन्न विषयों पर अपने पिता से सलाह और निर्देश माँगे। अकबर ने उसका बिन्दुवार उत्तर दिया था। साथ ही, उसे और समझाने के लिए विद्वान् अबुल फजल को भेजा। मुराद ने पढ़ने के लिए पुस्तकों की भी माँग की थी। उसे उत्तर मिला था कि उसे महाभारत का अनुवाद भेजा जाएगा। साथ ही ईश्वर के कुछ नाम भी ताकि उसे अपनी प्रार्थनाओं में मदद मिले। मुराद को जो मुख्य सलाह मिली थी, वह यह थी कि 'राजकीय नीतियों में पांथिक विभेदों को कभी हस्तक्षेप न करने दो।' बाद में यही सलाह अकबर ने कई विदेशी शासकों को भी दी थी।

चूँकि अकबर की मृत्यु आकस्मिक हुई, इसलिए यह अनुमान कठिन है कि यदि वह और जीवित रहता तो उस की मजहबी-राजनीतिक विरासत क्या होती? किन्तु इतना तय है कि वह इस्लाम के विरुद्ध होता। यही कारण है कि भारत के मुल्ला, उलेमा और पाकिस्तानी आलिम भी अकबर के नाम से चिढ़ते हैं। कारण यही लगता है कि उन्हें अपनी परम्परा का सच अधिक विस्तार से मालूम है। हिन्दुओं को इस बाबत कम जानकारी है, क्योंकि स्वतंत्र भारत में नेहरूवादियों तथा सेकुलर-वामपंथी प्रचारकों ने शुरू से ही अकबर को 'उदार इस्लामी-भारतीय शासक' का प्रतीक बनाने की जालसाजी रच रखी है। वे अकबर के ही सहारे मध्यकालीन भारत में इस्लामी शासन का महिमामण्डन करने में लगे रहे हैं।

सो, कहना चाहिए कि भारत के लोगों के लिए अकबर की 'महानता' का प्रश्न बेमानी है। जैसे- नेपोलियन, राबर्ट क्लाइव या लार्ड डलहौजी का महान् होना या न होना भारतवासियों के लिए प्रसंगहीन है। वे लोग जैसे भी थे, दूसरे देशों के इतिहासों के अंग हैं। उसी तरह, अकबर भी किसी विदेशी समाज के इतिहास का अंग है। भारत के लिए उसका कोई प्रसंग है तो यही कि चाहे सैनिक रूप से हिन्दू उसे न हरा सके, किन्तु यहाँ के साधारण ज्ञानियों ने उसके मतवाद को उस के सामने ही निर्णायक रूप से परास्त कर दिया था। बड़े तत्कालीन हिन्दू संत और ज्ञानी तो अकबर के पास कभी गए तक नहीं थे।

- डॉ. शंकर शरण

साभार- पाञ्चजन्य

(लेखक राजनीति शास्त्र के प्रोफेसर और वरिष्ठ स्तम्भ-लेखक हैं)

रसातल

– त्रिभुवन

आप एक-एक चीज को नोट करिए। आपके समस्त मानव अधिकार संगठन पूरी तरह खत्म कर दिए गये हैं। पीड़ितों की आवाजों के लिए अखबारों और मीडिया में अब स्पेस नहीं रह गया है, क्योंकि हमारी मानसिकता ही बदल चुकी है।

आज से पाँच साल पहले पेट्रोल और डीजल के दाम एक या दो रुपये बढ़ जाने पर जो उत्साही सब एडिटर न्यूज रूम के उस कोने से दौड़कर पेज वन पर खबर लगवाता था, उसे अब इसका

एहसास ही नहीं हो पाता, क्योंकि आपके दिमाग की मनोदशा का अध्ययन करके शासकों के रणनीतिकार ने पेट्रोल डीजल के भावों को ही रोज बदलना शुरू कर दिया है। देश की एक प्रभावशाली मंत्री स्मृति ईरानी फेक न्यूज वाले पत्रकार की बलि तो चाहती हैं, लेकिन वे उस रणनीतिकार को अपने हृदय में देवता की तरह बिठाये रखना चाहती हैं, जो देश के १३५ करोड़ लोगों से डीजल पेट्रोल की दरें बढ़ने की घटनाओं को अति चालाकी से छुपा रहा है।

ऐसा इसलिए हो रहा है, क्योंकि हमने धर्म का इतना प्रचार कर दिया है कि उसने हमारे दिलोदिमाग में विवेक नामक मानवीय गुण को रीप्लेस करके आस्था नामक तत्त्व को रख दिया है। हमें वर्षों तक कांग्रेस के शासन काल में विज्ञान की बेहतरीन शिक्षा से वंचित किया गया और इस तरह धर्म की राह आसान होती चली गई। आस्था के लिए उर्वर जगह तैयार करने वाले किसानों का काम कांग्रेस के नेताओं ने किया।

हमारे जीवन संसार में ऐसी संस्कृति बन गई कि विज्ञान तो एकदम से बाहर ही हो गया। कहाँ तो हमारी अनपढ़ दादी नानी विज्ञान के हिसाब से कढ़ी और दाल बनातीं और छौंक लगाती थीं और कहाँ इन लोगों ने मीडिया से ही विज्ञान के समाचारों को बाहर कर दिया। आज से सौ पचास साल नहीं, अभी दस-बीस साल पहले तक अनपढ़ों के पास ध्रुव तारे सहित पूरे अंतरिक्ष का अध्ययन मौजूद था, लेकिन नई शिक्षा ने जो कथित पढ़ी-लिखी पीढ़ी तैयार की है, उनके पास न तो अनपढ़ों जैसी स्पेस को छेद देने वाली आँख है और न विवेकी बुद्धिशीलता। यह स्थिति बहुत डरावनी है।

दरअसल, विज्ञान के बिना न तो हमारा इंटलेक्ट विस्तार पाएगा और न ही हमारी इमेजिनेशन को कोई आकार मिलेगा। यह सोच, विचार और लक्ष्य की निर्धनता है। इस मैकेनिज्म ने हमारी

गतांक से आगे ....

सबसे दमकती और गौरवशाली संस्थाओं को एक अंधेरी गुहा में डाल दिया है। अगर इस तमस में कोई चीज हमें राह दिखा सकती है तो वह कला, साहित्य, संस्कृति और विज्ञान पर टिका मीडिया ही है।

साहित्य, संगीत, कला और विज्ञान विहीन राजनीतिक लोग शस्त्रों को कम करने की बातें करते हैं, लेकिन वे इन्हें समाप्त नहीं करते। वे हिंसा को कम करते हैं, समाप्त नहीं। वे झूठ को भी समाप्त नहीं करेंगे, सिर्फ कम करेंगे। यह एक अनफिनिश्ड स्टोरी है। हालाँकि हम अपने आपको दुनिया का सबसे सभ्य देश मानते हैं, लेकिन सच बात ये है कि किसी भी सभ्यता का सबसे समृद्ध दौर वह होता है जब दूरियाँ और सीमाओं के दायरे दरकते हैं।

और सबसे बुरी और दयनीय सभ्यता वह होती है, जो मनुष्यों के बीच दूरियाँ खड़ी करती है और नई सरहदों का निर्माण करती है। अतीत की संस्कृति और आज के मनोरंजन युग में कितना फर्क है। एक भविष्य की पीढ़ियों के लिए निर्माण और सृजन करती है। भविष्य को जीवन्त और सुरक्षित रखती है। उसकी झोली में आशीषें ओर आशीर्वाद हैं। लेकिन आज का मनोरंजन युग खेतों, नदियों, झीलों, पहाड़ों, वनों, वृक्षों, सुखों और सपनों को केक और पॉपकॉर्न की तरह उदरस्थ कर रहा है।

हमें निश्चित ही एक बड़े बदलाव की जरूरत है। ऐसे बदलाव की जो व्यापक हो। यह बदलाव ही समाज की जड़ता को तोड़ेगा। विज्ञान मनुष्य की चेतना को झकझोरकर ही उसे चैतन्य बनाता है। विज्ञान को किसी के अप्रूवल की आवश्यकता नहीं होती।

मीडिया अगर विज्ञान से प्रेम करेगा तो वह विवेकवान नागरिक समाज बनाएगा, जो राजनेताओं का शत्रु समाज होगा। मीडिया अगर धर्म से प्रेम करेगा तो वह आस्थावान नागरिक समाज की रचना करेगा, जो राजनेताओं को ईश्वरीय दूत समझेगा। इसकी डिग्री आज के लोकतंत्र में न्यून हो सकती है, लेकिन बेसिक कैरेक्टर्स तो वही हैं। वही देवता की तरह पूजा जाना। ईश्वर की तरह प्रार्थनाएँ करवाना और अल्लाह की तरह निराकार ऐसे कि आपको बहिश्त चाहिए तो दिन में उनकी पाँच नमाज पढ़नी ही होगी।

धर्म और राजनीति में एक समानता है। वे धत्कर्म, भ्रष्टाचार और हत्याओं को भुला देते हैं। इनका आधार भय, आतंक और अभिशाप होते हैं। धर्म मिथकों के सहारे परवान चढ़ता है। विज्ञान प्रयोगों के नतीजों के सहारे। राजनीति झूठ के प्रयोग करती है। सत्ता की राजनीति काठ की हांडियों में बार-बार सब्जबागों का हलवा तैयार करके चुनावों की डायनिंग टेबल सजाने का नाम है।

हम एक विचित्र मीडिया सभ्यता का निर्माण कर रहे हैं। इसमें सरकारों, राजनीति, राजनेताओं और भ्रष्टाचारियों के सच का उत्खनन नहीं होता। इसमें पर्वतों, नदियों, झीलों, वनों, कृषि, औषधियों, वनस्पतियों आदि को नष्ट करने वालों की खबर नहीं ली जाती। टीवी चैनलों में इनकी जगह कुकरी और फैशन शो सबसे ज्यादा चलाए जाते हैं। अब राजनीतिक घटनाक्रमों की विवेचना करने वाले विचारशील राजनीति विश्लेषकों की जगह शेफ और फैशन डिजाइनर ले चुके हैं। कलाविदों, कवियों, कथाकारों, नाटककारों, वैज्ञानिकों, संगीतकारों, दर्शनशास्त्रियों और ललितकला के पारखियों को तो आप भूल ही जाइए। पहले जिस मानसिकता के चलते शिक्षकों और विचारकों को मीडिया के डोमेन में जगह दी जाती थी, उसे अब क्रिकेट, सितारे या भौंडे सोपऑपेरा की अपसंस्कृति ने अपदस्थ कर दिया है और वही अब हमारे स्वाद और अभिरुचियों को प्रभावित करते हैं। एक बार फिर स्मरण करवा देना उचित होगा कि साहित्य हमें उम्मीदें बाँटता है, विवेक देता है, भक्तिभाव से परे करके दृष्टि में आलोचना का रंदा और बसूला फिट करता है। कला सौंदर्य बोध देती है। संगीत दुःखों, कष्टों और अवसादों को आशाओं, न्यायप्रियता और प्रफुल्लताओं में बदलता है। लेकिन ये सब एक जगह मिलते हैं तो वे मनुष्य जैसे मनुष्य की रचना करते हैं।

मीडिया की पिपासा लिबर्टी की पिपासा भी है। उसका काम ऐसे कोनों में झाँकना भी है जहाँ 'रूल ऑव लॉ' मानव अधिकारों और मनुष्य की नाना स्वतंत्रताओं का हनन होता है। मीडिया लोकतंत्र का एक जरूरी हरावल दस्ता है, जो इस दुनिया को डिक्टेटरों, टेररिस्टों, वारमोंगर्स और फैनेटिक दानवों से मुक्ति दिलाने का काम करता है। यह मीडिया ही है, जिसका काम जंगल में बदलते शहरों की संवेदनहीनता के कोलतार से आच्छादित सड़कों के सहारे फुटपाथ की रक्षा की आवाज बुलन्द करने से लेकर अंतर्राष्ट्रीय बॉर्डर के सहारे भी ऐसे गलियारों का अस्तित्व तैयार करना है, जिनसे सभी राष्ट्रीयताओं, जातीयताओं, संस्कृतियों को अपनाने वालों और परम्पराओं को मानने वालों के कदमों को गतिमान रखने के काम को समर्पित हो। मीडिया का काम शहरों और गाँवों में ही पुलों के निर्माण की आवाज उठाना नहीं है, उसका काम विभिन्न देशों, नाना संस्कृतियों और तरह तरह के लोगों के बीच भी सेतु निर्माण का है। अगर वे सेतु बनाने के बजाय ऐसे पुलों के विध्वंस में जुटी शक्तियों के हाथ का खिलौना बनते हैं तो इस लोकतंत्र के लिए बहुत अहितकारी है।

यह एक विचित्र बात है कि मीडिया अक्सर विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका की भूमिका निभाने की कोशिशें करने लगता है, लेकिन जैसे ही कला, साहित्य और संगीत की बात आएगी तो वह इनसे आश्चर्यजनक दूरी बनाने लगता है। उच्च संस्कृति, स्वतंत्रता, समृद्धि और न्याय पर आधारित सौन्दर्यबोध वाले समाज के निर्माण की आशा एक सुन्दर फंतासी है। लेकिन इसे आकार देने में कार्यपालिका, न्यायपालिका या विधायिका से कहीं अधिक कला, साहित्य और संस्कृति की भूमिका है। एक अच्छा मीडिया बेबाक खबरों से कॉन्शंसनेस का ही निर्माण नहीं करता, वह उन डिजायर्स और लोंगिंग्स की कोंपलों को भी प्रस्फुटित करता है, जिनसे जन्म लेते सुखद सपने और सुन्दर फंतासियाँ मनुष्य से क्रूरताएँ छीनकर करुणा से भीगी मनुष्यता का आह्वान करते हैं। सत्ता की लालसाएँ दसों दिशाओं में झपट्टा मार रही हैं और सत्य और तथ्य का अतिक्रमण कर रही हैं। एक ऐसे समय में सत्ता की लिप्सा अनन्त अतिक्रमण करते हुए न्यायपालिका, कार्यपालिका और विधायिका के कार्यक्षेत्र में अतिक्रमण कर रही है, उस समय एक समानान्तर मीडिया स्थापित कर आह्वान किया जा रहा है और नए सिद्धान्त और सुभाषित स्थापित किए जा रहे हैं।

'असत्य के लिए कभी किसी से न डरो, लोक से भी नहीं, इतिहास से भी नहीं, परम्परा से भी नहीं, नैतिक मूल्यों से भी नहीं, विधि और विधान से भी नहीं, संविधान से भी नहीं, संहिता से भी नहीं।'

- त्रिभुवन

मुख्य सम्पादक (दैनिक भास्कर, उदयपुर)

१२ सितम्बर- प्रथम पुण्यतिथि

आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान् एवं सिद्धहस्त लेखक

डॉ. भवानी लाल भारतीय

'अमर शहीद पंडित लेखराम जी की यह अंतिम इच्छा थी कि आर्य समाज से तहरीर का कार्य बन्द न हो।' पंडित लेखराम जी के इसी कथन को साकार रूप प्रदान किया आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान् भवानीलाल जी भारतीय ने। यह सौभाग्य और संयोग की बात है कि भारतीय जी का जन्म ऋषि दयानन्द सरस्वती के प्रधान कार्यक्षेत्र राजस्थान में हुआ। नागौर जिले के परबतसर गाँव में एडवोकेट फकीर चन्द जी के यहाँ ६ जून १९२४ को आपका जन्म हुआ।

आपने संस्कृत और हिन्दी में एम.ए. किया। 'आर्य समाज का संस्कृत भाषा और साहित्य को योगदान' पर आपके महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्य पर राजस्थान विश्वविद्यालय ने आपको पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की। युवावस्था से ही आपकी कलम ने धर्म, संस्कृति एवं ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध में अनेक महत्वपूर्ण रचनाएँ रच डालीं, तब से साहित्य सृजन का कार्य जीवनपर्यन्त चलता रहा। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वेद, उपनिषद्, पुराण और इतिहास की मौलिक विवेचना और चिन्तन आपकी लेखन प्रतिभा की विशेषता रही है।

आमजन में जब वेद और उपनिषद् की चर्चा चलती है तो वे सोचते हैं, वेद-उपनिषदों की बातें कहाँ हमारे समझ में आयेगी। ऐसा सोचकर आर्य अर्थात् हिन्दू धर्मावलम्बी इसमें रुचि नहीं लेते हैं। भारतीय जी ने ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद एवं सामवेद में से सौ-सौ मंत्रों की धारावाही सरस भावपूर्ण व्याख्या की है जिससे सरल भाषा में आमजन वेदों को समझ सकें। वेदों के बाद प्रामाणिक माने जाने वाले ग्रन्थों में उपनिषद् शीर्षस्थ हैं। अध्यात्म जैसे गूढ़ विषय को स्पष्ट एवं सरल भाषा में उपनिषदों की कथाओं को कलमबद्ध करके हर भारतीय नागरिक में वेद और उपनिषदों में रुचि उत्पन्न करने का प्रयास किया। इससे बड़ी धर्म की क्या सेवा हो सकती है।

पंजाब विश्वविद्यालय में दयानन्द पीठ के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर रहते हुए आपके निर्देशन में २०-२५ शोध छात्रों ने अपना शोधकार्य पूरा कर पी.एच.डी. की उपाधि ली। ऋषि दयानन्द के जीवन के बारे में भारतीय जी का गूढ़ ज्ञान देखकर अनेक लोग ताज्जुब करते थे। ऋषि दयानन्द एवं उनके जीवन में बारे में जो व्यक्ति शोध अथवा लेखन कार्य करता उसके लिए भारतीय जी से मिलकर परामर्श लेना अवश्यंभावी हो जाता। आस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में एशियन अध्ययन के अध्यक्ष डॉ. जे.टी.एफ.जार्डन्स, अमेरिका के शिकागो विश्वविद्यालय के शोधार्थी जेकल्युवेलिन आदि विदेशी विद्वानों ने अपने अपने कार्यों में भारतीय जी का मार्गदर्शन लिया।

'नवजागरण के पुरोधा' शीर्षक से भारतीय जी ने ऋषि दयानन्द का प्रामाणिक जीवन चरित लिखा। इसके दूसरे संस्करण में जीवन चरित को दो भागों में प्रकाशित किया गया है। इस जीवन चरित में घटनाएँ तथ्यपरक, इतिहास सम्मत एवं प्रमाण पुष्ट हैं। इस अमरकृति से पाठकगण भारतीय जी को हमेशा याद रखेंगे।

इसके अतिरिक्त भारतीय जी ने 'कृष्णचरित' पुस्तक लिखी। इसमें उन्होंने कृष्ण का मानवीय रूप ही स्वीकार कर उन्हें वेदों और उपनिषदों में पारंगत बताया है। भारतीय जी ने लिखा कि राधा का कृष्ण के जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं था। राधा का जिक्र महाभारत तो क्या श्रीमद्भागवत में भी नहीं है। कृष्ण के साथ राधा का नाम लेने वालों के लिए यह

पुस्तक उनकी आँखें खोल देने में सक्षम है। भारतीय जी की लेखनी से अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी गई हैं। जो समस्त आर्य जगत् के लिए अनमोल विरासत है। इन पुस्तकों में

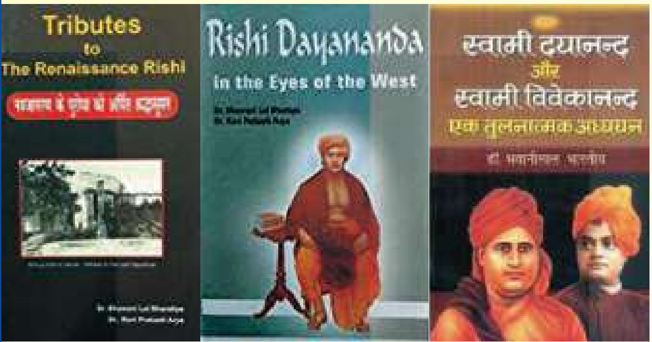

आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी, परोपकारिणी सभा का इतिहास, आर्य समाज का इतिहास (साहित्य), महर्षि दयानन्द के भक्त प्रशसंक और सत्संगी, आर्य लेखक कोष, स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (नौ खण्डों में) सम्पादन, पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा, चतुर्वेद आध्यात्म शतक, महर्षि दयानन्द और विवेकानन्द आदि अनेक ग्रन्थ हैं जो आर्य समाज के गौरव को बढ़ाते हैं।

भारतीय जी जितने कुशल लेखक थे साथ ही वे मंजे हुए वक्ता भी थे। देश-विदेश में भ्रमण कर ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के बारे में अपने विचार और अपनी ओजस्वी वाणी एवं धाराप्रवाह बौद्धिक से श्रोताओं पर एक गहरी छाप छोड़ते थे।

भारतीय जी की एक विशेषता थी कि वे अपने पास आए हर पत्र, पोस्टकार्ड का जवाब अवश्य देते थे। वैदिक धर्म एवं आर्य समाज के विरुद्ध भ्राँतियों के पक्ष में बातें कई बार अन्य पत्र-पत्रिकाओं में छपने पर पाठकगण तुरन्त प्रभाव से उनका उत्तर देने का अनुरोध करते थे।

भारतीय जी निःसंदेह एक सुयोग्य लेखक, अनुसंधानकर्त्ता, विशाल ग्रन्थ संग्रहकर्त्ता और साहित्य साधना में तपे हुए स्वर्ण थे। उनकी लेखन शैली सरल प्रेरक और मौलिक है। आप प्रखर वक्ता थे, उनकी वाणी में कटुता नहीं माधुर्यता थी। किसी विषय पर पक्ष या विपक्ष में उनसे अपनी प्रतिक्रिया लेने पर वे तुरन्त देने में समर्थ थे। या यूँ कहें कि वे चलते फिरते विश्वकोष थे। भारतीय जी ने जीवन भर लेखन में लगभग दो सौ ग्रन्थों की रचना की एवं हजारों लेख पत्र पत्रिकाओं के लिए लिखे। आपने उच्चकोटि का साहित्य सृजन एवं आर्य समाज की जो सेवा की है वह स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है।

– महेश चन्द्र माथुर 'सेवानिवृत्त पुस्तकालयाध्यक्ष'
डी २ मॉडल टाऊन भट्टी की बावड़ी
जोधपुर- ३४२००८

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक
भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) | भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) | डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१
अब मात्र कीमत ₹ 45 में
४००० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
₹100 के स्थान पर अब ₹45 में उपलब्ध
सौ प्रतियाँ लेने पर ₹4000
(डाक खर्च अतिरिक्त)
₹15000 सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग राशि देकर एक हजार प्रतियों पर अपना वा अपने किन्हीं परिचित का विवरण फोटो सहित छपवावें।

वैदिक ज्ञान विज्ञान सम्पदा (एक झांकी)

वेद और भौतिक विज्ञान

ऋषि दयानन्द का अवदान

वेद का विषय बहुत लम्बे समय से विवादास्पद रहा है। वेद के प्राचीन प्रामाणिक विद्वान् ऋषि आचार्य यास्क ने अपने वेदार्थ पद्धति के पुरोधा ग्रन्थ निरुक्त में वेदार्थ के ज्ञाताओं की तीन पीढ़ियों का उल्लेख किया है। पहली पीढ़ी वेदार्थ ज्ञान की साक्षात् द्रष्टा थी जिसे वेदार्थ ज्ञान में किञ्चित मात्र भी सन्देह नहीं था। **'साक्षात्कृत धर्माण ऋषियो, बभूवः।'** दूसरी पीढ़ी उन वैदिक विद्वानों की हुई जिन्हें वेदार्थ ज्ञान साक्षात् नहीं था, उन्होंने अपने से पुरानी ऋषियों की उस पीढ़ी से जो साक्षात्कृतधर्मा थी, उपदेश के द्वारा वेदार्थ ज्ञान प्राप्त किया। इस दूसरी पीढ़ी को भी वेदार्थ ज्ञान सर्वथा शुद्ध और अपने वास्तविक रूप में ही मिला **'ते पुनवरेभ्योऽसाक्षात् कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रादुः।'** और तीसरी पीढ़ी उन लोगों की आयी जो उपदेश के द्वारा भी वेदार्थ ज्ञान प्राप्त करने में असमर्थ थी। उन्होंने वेद वेदांग आदि ग्रन्थों का सम्मान किया और उन ग्रन्थों की सहायता से वेदार्थ ज्ञान प्राप्त किया।

'उपदेशाय ग्लायन्त इमं ग्रन्थं समाम्नासिषुर्वेदंच वेदांगानि च।।' इस तीसरी पीढ़ी को वेदार्थ ज्ञान साक्षात् रूप में नहीं हुआ अपितु परोक्ष रूप में प्राप्त हुआ। अतः इनका ज्ञान परतः प्रमाण ग्रन्थों पर आधारित था, वेद का स्वतः प्रामाणिक ज्ञान तो वेदार्थ का साक्षात् वेद की अन्तःसाक्षी के आधार पर समझने वाले लोगों को था। फिर इन तीनों पीढ़ियों में समय का परस्पर अन्तराल बहुत था। और इस तीसरी पीढ़ी के बाद तो उत्तरवर्ती लोगों को वेद-वेदांग आदि ग्रन्थ जो वेदार्थ के लिए परतः प्रामाण्य के ग्रन्थ हैं और भी अधिक दुरुह और समझ से दूर हो गए। यास्क के समय तक आते-आते यह परिणाम हुआ कि वेदार्थ अधिकतर ओझल हो गया। विद्वान् वेद का मनमाना अर्थ करने लगे। एक-एक मंत्र का अर्थ करने की परम्परा १०-११ प्रकार की चल पड़ी, यह स्वयं यास्क ने लिखा है, 'इति याज्ञिकाः, इति पौराणिका, इत्यैतिहासिकाः, इति वैयाकरणाः, इत्यन्ये, इन्यपरे, इत्येके', इन शब्दों में यास्क ने अपने ग्रन्थ निरुक्त में एक मंत्र की व्याख्या अनेक प्रकार से करने का ब्यौरा दिया है। परिणामस्वरूप वेदार्थ इतना अनिश्चित, विवादास्पद बन गया कि एक सम्प्रदाय वैदिक विद्वानों की इसी कमी का दुरुपयोग और लाभ उठाकर कहने लगा कि वेद जब इतना अस्पष्ट विवादास्पद और अज्ञात है तो वेद के मंत्र अनर्थक हैं, उनका कोई अर्थ नहीं है ('अनर्थकाः मन्त्रा इति कौत्सः') यह वेदार्थ की अत्यन्त अन्धकार की स्थिति थी जो यास्क के समय तक रही।

यास्क ने वेदार्थ उद्धार का बीड़ा उठाया। सर्वप्रथम यास्क आचार्य ने उन वैदिक शब्दों और वैदिक धातुओं का संकलन अपने निघण्टु में किया जो वेदार्थ के लिए उस समय दुरुह तथा अधिक आवश्यक थे। फिर यास्क ने निरुक्त की रचना की। जिसमें पहले वेदार्थ पद्धति का प्रतिष्ठापन किया। वेद को अनर्थक मानने वाले सम्प्रदाय का उन्हीं की युक्तियों से खण्डन किया, उन्हीं का जूता उन्हीं के सिर पर मारा। यास्क ने उद्घोष दिया कि सब नाम आख्यात हैं और वेदार्थ करने के लिए वे यौगिक होते हुए भी किसी एक निश्चितार्थ में रूढ़ हैं, उदाहरणार्थ परिव्राजक, भूमिज इत्यादि जिनको पूर्व पक्षी भी यौगिक मानते हुए भी योगरुढ़ मानता है, जिससे शब्दों की यौगिक व्युत्पत्ति करने के बावजूद भी मनमाना काल्पनिक अर्थ न किया जा सके। यह उन लोगों के लिए करारा जवाब था जो यौगिक पद्धति पर आक्षेप करके कहते थे कि 'तृण' शब्द का अर्थ केवल तिनका न करके वे सब अर्थ 'तृण' शब्द के होने चाहिए जो भी कुरेदने का काम करते हैं। खैर हमारा यहाँ यह विषय नहीं है, इस पर हम अन्यत्र विस्तार से लिख चुके हैं (द्र.- ले. द्वारा वेदभाष्य पद्धति और स्वामी दयानन्द- एक सर्वेक्षण) यास्क सर्वप्रथम वैदिक विद्वान् थे जिनका लिखित ग्रन्थ न केवल यह कहता है कि वेद में भौतिक विज्ञान है, अपितु वेद की व्याख्या भी इस आधार पर करता है। यास्क ने अपने निरुक्त के प्रारम्भ में ही देवता शब्द की परिभाषा दी जो देवता वेद के प्रत्येक सूक्त या अध्याय के प्रारम्भ में दिए हुए होते हैं।

'यवत्काम ऋषिर्यस्यां देवतायामार्थपत्यमिच्छत् स्तुतिं प्रयुङ्क्ते तद्दैवत: स मन्त्रो भवति'

इस यास्कीय परिभाषा के अनुसार देवता उस सूक्त का वर्णनीय विषय होता है जो शीर्षक के रूप में प्रत्येक सूक्त या अध्याय के प्रारम्भ में वेद में दिया हुआ होता है ताकि पाठक को निश्चय रहे कि अमुक मंत्रों का वर्णनीय विषय अमुक है। यास्क ने समूचे वेदों के अध्ययन के आधार पर यह निर्णय दिया कि सभी वैदिक मंत्रों के देवता अर्थात् वर्णनीय विषय केवल तीन ही हैं, वे या तो पृथ्वी-स्थानीय भौतिक विज्ञान अग्नि है, या अन्तरिक्ष स्थानीय भौतिक विज्ञान इन्द्र, मेघ या विद्युत् आदि हैं, या द्युस्थानीय भौतिक विज्ञान सूर्य है। (द्र.- 'तिस्र एव देवता: इत्यादि अग्नि: पृथ्वीस्थानीय इन्द्रो वा वायुर्वाऽन्तरिक्षस्थानीय:, सूर्यो द्यु स्थानीय:'l)

समग्र विश्व मण्डल की सृष्टि (समष्टि) इन्हीं तीन भौतिक भागों में विभक्त है, और वेद इसी समष्टि के विज्ञान की व्याख्या हैं जिनमें आत्मा और परमात्मा चेतन तत्त्व भी समाहित हैं। अत: वेद के मंत्रों के ये तीन ही विषय या देवता हैं। निरुक्तकार यास्क ने इस स्थापना के बाद वेद के सभी देवताओं को इन्हीं तीन भागों में बाँटकर इनकी भौतिक वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की। यहाँ इस दिशा में निरुक्त के दो उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ।

वेद में 'असुर' शब्द सूर्य के विशेषण के रूप में प्रयुक्त किया गया है यथा 'असुरत्वमेकम्' जिसका शाब्दिक अर्थ हुआ कि एकमात्र सूर्य ही असुर है। अब यहाँ 'असुर' शब्द का अर्थ बड़ा ही आपत्तिजनक और अनर्थक है जैसाकि साधारणत: समझा जाता है और आधुनिक भाष्यकारों ने किया भी है, जिससे सूर्य असुर (राक्षस) बन गया। निरुक्त में यास्क ने इस शब्द का अर्थ स्पष्ट किया, 'असून् प्राणान् राति ददातीति असुर:'l अर्थात् असु यानी प्राणों को देने वाले को असुर कहते हैं। इससे स्पष्ट हुआ कि सूर्य वेद में असुर इसलिए कहा गया क्योंकि वह संसार में प्राणदायक शक्ति है। यही नहीं अपितु विश्वभर में यदि कोई मौलिक प्राणदायक शक्ति है तो वह केवल मात्र सूर्य है। यह कितना महत्वपूर्ण भौतिक विज्ञान का रहस्य वेद में छुपा हुआ है। आज संसार के वैज्ञानिक कह रहे हैं कि संसार में जीवन (प्राणी) तभी तक है जब तक सूर्य है, यदि सूर्य नष्ट होता है तो विश्व में जीवित प्राणी भी समाप्त हो जायेंगे। यह भौतिक वैज्ञानिक तथ्य वेद में बड़े ही सहज भाव से कह दिया गया है। सूर्य से ही सब प्राणी वनस्पति आदि जीवित हैं।

दूसरा उदाहरण 'वैश्वानर' शब्द का है। वैदिक शब्द 'वैश्वानर' का क्या अर्थ है? यह यास्क के समय बड़ा विवादास्पद बन गया था। अत: यास्क ने निरुक्त में प्रश्न उठाया 'अथ को वैश्वानर:?' वैश्वानर कौन है? इसका समाधान भी यास्क ने इस शब्द की व्युत्पत्ति से किया वैश्वानर: की व्युत्पत्ति है 'विश्वान्नराज्जायते इति वैश्वानर:', अर्थात् विश्वानर से पैदा होने वाले को वैश्वानर: कहते हैं। विश्वानर: का अर्थ है सूर्य। सूर्य से साक्षात् कौन-सी अग्नि उत्पन्न होती है इसका परीक्षण यास्क ने वैज्ञानिक प्रयोग द्वारा किया। यास्क ने कहा कि एक आतिशी शीशे का एक भाग सूर्य की ओर रखो और उसके दूसरी तरफ सूर्य की किरणों को गुजरने दो। जिधर सूर्य की किरणें गुजर रही हैं

उधर किरणों के समक्ष सूखा गोबर (शुष्क गोमय) ऐसे रखो कि सूर्य की किरणें उस गोबर पर पड़ें। थोड़ी देर बाद उस गोबर में धुआँ उठेगा और आग पैदा हो जायेगी। यह अग्नि ही वैश्वानर है क्योंकि यह विश्वानर अर्थात् सूर्य से पैदा होती है। इस प्रकार यास्क ने यह भौतिक वैज्ञानिक तथ्य स्थिर किया कि समूची पार्थिव अग्नि वैश्वानर है क्योंकि यह सूर्य से पैदा होती है। यही आज की सौर ऊर्जा (सोलर एनर्जी) है जिसे आज के वैज्ञानिक अपनी बहुत बड़ी उपलब्धि मानते हैं। यही तथ्य यजुर्वेद के प्रथम मंत्र में ही कह दिया गया जिसका देवता सविता है 'इषे त्वोर्ज्जे त्वा' अर्थात् हे सूर्य हम तेरा उपयोग ऊर्जाशक्ति की प्राप्ति के लिए करें।

यह भौतिक वैज्ञानिक तथ्य ब्राह्मण ग्रन्थ और पूर्व मीमांसा के याज्ञिक दर्शन में भी भरे पड़े हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में कहा गया है 'अग्नीषोमीयमिदं जगत्' यह संसार अग्नि और सोम दो भौतिक शक्तियों से निर्मित है। यही अग्नि और सोम आज की ऋणात्मक और धनात्मक, सकारात्मक और नकारात्मक (पॉजिटिव ओर नेगेटिव) शक्तियाँ हैं। यही वे दो धुरी हैं जिन पर आज का कम्प्यूटर विज्ञान केन्द्रित है जिसका आधार

(बायनरी सिस्टम) (द्विधुरीय पद्धति) है। पूर्व मीमांसा का समग्र यज्ञ-विज्ञान इसी दर्शन पर आधारित है। उदाहरणार्थ वर्षा की आवश्यकता होने पर वर्षा करवाने के लिए वर्षेष्टि याग जो इसी वैज्ञानिक ज्ञान पर आधारित है कि वर्षा करवाने वाली भौतिक शक्तियों को कैसे वृष्टि-अनुकूल वातावरण पैदा करने के लिए यज्ञ द्वारा आवर्जित किया जाये।

भारत कृषि प्रधान देश होने के कारण अतिवृष्टि और अनावृष्टि की समस्या जो कृषि को एकदम सीधे विनाशकारी रूप से प्रभावित करती है, का समाधान ढूँढ़ने के लिए बड़ी वैज्ञानिक खोजें प्राचीनकाल में हुई थीं। इन्हीं समस्याओं का समाधान, वृष्टियाग है जो आज भी देश की आर्थिक दशा जिसका आधार कृषि है को सुधारने के लिए अत्यन्त उपयोगी और प्रासंगिक है। वेद में इसीलिए एक पूरा सूक्त कृषि सूक्त है। प्राचीनकाल में कृषि विज्ञान पर भारत से बढ़कर वैज्ञानिक खोज और किसी देश में नहीं हुई। कौटिल्यार्थ शास्त्र इसी के विस्तार से भरा पड़ा है। आज तो इसके साथ पर्यावरण की समस्या भी जुड़ गई है जो कृषि और छोटे वृक्षों को नष्ट करने तथा यज्ञ-याग आदि के अभाव के कारण पैदा हुई हैं।

इसी प्रकार अन्य याग हैं जो भौतिक पदार्थों की प्राप्ति के लिए की गई कामनाओं की पूर्ति के निमित्त किए जाते हैं। इसीलिए पूर्व मीमांसा में महर्षि जैमिनि ने यज्ञ की परिभाषा दी है- **'देवतोद्देश्येन द्रव्यत्यागः यागः'।**

वैदिक विज्ञान की यह धारा वैदिक दर्शनों में विशेष विषय के रूप में निष्पन्दित हुई जिसमें न्याय और वैशेषिक दर्शन में भौतिक विज्ञान के (फिजिक्स) आधारभूत पाँच महाभूत, सांख्य दर्शन में प्राणिक विज्ञान (बॉयोलोजिकल साइन्स) के प्रमुख तत्त्व बुद्धि, मन, चित्त, अहंकार, ज्ञानेन्द्रियाँ तथा तन्मात्रायें आदि और वेदान्त दर्शन में आध्यात्मिक (मेटाफिजिक्स) चेतना तत्त्व का विशेष गंभीर और व्यापक विश्लेषण किया गया। योगदर्शन में क्रियात्मक रूप में चेतन तत्त्व के साक्षात्कार और अनुभव की पद्धति और प्रक्रिया का विशद् प्रतिपादन किया गया। इनमें एक एक दर्शन के प्रत्येक भौतिक वैज्ञानिक तत्त्व पर गंभीर और स्वतंत्र खोज और चिन्तन करने की आवश्यकता है। क्रमशः ....

डॉ. महावीर मीमांसक
फ्लेट नं.- २४९, सी.ए. अपार्टमेन्ट, पश्चिम विहार
नई दिल्ली- ११००६३
चलभाष- ९८११९६०६४०

लेखक की पुस्तक 'वैदिक विज्ञान सम्पदा (एक झांकी)' से उद्धृत

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ११/१९

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (नवम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	बी १	१	■	■	२	हा २	मू २	२	■
३ मु	३	■	४	भा ४	४	■	५	का ५	५
■	६ स	६	६	म ६	■	७	र ७	मा ७	७

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. मुक्ति में जीव की कितने प्रकार की शक्ति होती है?
२. जो जीव के नाश को मुक्ति समझते हैं उनको स्वामी जी ने क्या कहा है?
३. जीव जब दुःखों से छूटकर आनन्द स्वरूप सर्वव्यापक अनन्त परमेश्वर में आनन्द से रहता है वह स्थिति क्या कहलाती है?
४. व्यास जी मुक्त जीव में अपवित्रता, पापाचरण, दुःख, अज्ञानादि का क्या मानते हैं?
५. मुक्त जीव स्थूल शरीर छोड़कर संकल्पमय शरीर से किस स्थान में परमेश्वर में विचरते हैं?
६. परमात्मा जो कि .... है उसे जानने की इच्छा करनी चाहिए?
७. किसके सम्बन्ध से मुक्त जीव सब लोकों और सब कामों को प्राप्त होता है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०९/१९ का सही उत्तर

१. परमात्मा २. प्रतिविम्ब
३. अदृश्य ४. मिथ्याचारी ५. है
६. विपरीत ७. एकरस

''विस्तृत नियम पृष्ठ १४ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ दिसम्बर२०१९

विशेष समाचार

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी विश्व आर्य सम्मान से सम्मानित

जोधपुर के महर्षि दयानन्द स्मृति न्यास के तत्त्वावधान में दिनांक २८ अक्टूबर २०१६ से २ नवम्बर २०१६ तक 'ऋषि स्मृति सम्मलेन' भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। सुन्दर समारोह का सर्वाधिक आकर्षक तथा हृदयस्पर्शी क्षण वह था जब आर्यजगत् के शीर्षस्थ पदाधिकारियों, विद्वानों एवं अपार जनसमूह की करतल ध्वनियों के मध्य आर्य जगत् के भामाशाह, कर्मयोगी, वयोवृद्ध दानवीर पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी को, विश्व भर की आर्यसामाजिक संस्थाओं को पुष्पित पल्लवित करने में उनके द्वारा प्रवाहित दान-सरिता के योगदान को नमन करने के फलस्वरूप ''विश्व-आर्यरत्न'' के सम्मान से सम्मानित किया गया। चाँदी के एक किलो के पत्रे पर सम्मान-पत्र, विशुद्ध मोतियों की माला में पिरोये स्वर्णिम 'ओम' के पेंडेंट, महाशय जी के चित्र सहित स्वर्ण-कलंगी से शोभायमान जोधपुरी साफे से जन-जन की श्रद्धा के केन्द्र महाशय जी का करतल ध्वनि के मध्य अभिनन्दन कर उपस्थित आर्यों ने स्वयं को धन्यमान किया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य, राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त न्यायाधिपति श्री एस. एस. कोठारी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान व महामंत्री श्री धर्मपाल आर्य व विनय आर्य जी, परोपकारिणी सभा के प्रधान डॉ. वेदपाल जी, डॉ. सूर्या देवी चतुर्वेदा, आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश जी, उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. विनय विद्यालंकार जी, आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान श्री दीन दयाल गुप्त जी, मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री अरुण अब्रोल जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, राष्ट्रीय आर्य निर्माण पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह जी, डॉ. सुद्युम्नाचार्य जी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक आर्य जी इस महान् अवसर पर उपस्थित थे। इस अवसर पर

'महाशय धर्मपाल गुलाटी विद्या संकुल' का लोकार्पण भी किया गया। 'महर्षि दयानन्द स्मृति न्यास' जोधपुर के कार्यकारी प्रधान श्री विजय सिंह भाटी व मंत्री श्री किशन लाल गहलोत ने सभी आर्यजनों व विशेष महाशय जी के प्रति आभार प्रकाशित किया।

काशी में उमड़ी आर्य जन मेदिनी

१६ नवम्बर १८७६ को महर्षि दयानन्द ने काशी के तत्कालीन पंडितों को शास्त्रार्थ के लिए आहूत किया कि वे मूर्तिपूजा को यदि वेदसम्मत मानते हैं तो सिद्ध करके, वेद के एक भी मूर्ति-पूजा समर्थक मन्त्र को प्रस्तुत कर दिखाएँ। काशी के पंडित शास्त्रार्थ से बचना चाहते थे क्योंकि उनमें से किसी की भी वेद में गति नहीं थी। परन्तु महाराजा के दबाब के अन्तर्गत उन्हें शास्त्रार्थ हेतु उद्यत होना पड़ा। परन्तु मूर्तिपूजा उनकी रोजी-रोटी और प्रतिष्ठा का साधन बन चुकी थी और अन्दर ही अन्दर वे ये भी जानते थे कि वेद से मूर्तिपूजा का समर्थन सिद्ध कर पाना असंभव है अतः उन्होंने छल-बल का प्रयोग करके अपने पक्ष को

हर हाल में विजित दिखाने का निश्चय कर लिया। काशी नरेश भी यही चाहते थे कि मूर्तिपूजा-पक्ष ही येन-केन-प्रकारेण विजित हो। शास्त्रार्थ स्थल पर ६०००० लोगों की भारी भीड़ इकट्ठी हुयी। और पूर्व निश्चयानुसार जब काशी का एक भी पंडित वेद में मूर्तिपूजा का विधान न दिखा सका तो काशी नरेश ने ताली पीट दी और पंडित लोग दयानन्द हार गए का शोर मचाते हुए बाग से चले गए। पर अनेक पत्रों ने इस तथ्य को प्रकाशित किया कि 'काशी के पंडित मूर्तिपूजा के समर्थन में एक भी मन्त्र प्रस्तुत न कर सके।'

उक्त घटना के १५० वर्ष पश्चात् काशी शास्त्रार्थ की स्मृति में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा-उत्तर प्रदेश तथा काशी शास्त्रार्थ स्मृति न्यास के तत्त्वावधान में ११ अक्टूबर से १३ अक्टूबर २०१६ तक त्रिदिवसीय भव्य समारोह आयोजित किया गया जिसमे आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान्, भजनोपदेशकों के अतिरिक्त आर्य नेताओं ने भी भाग लिया। अंतिम दिन निकाली गयी भव्य शोभायात्रा का समापन काशी शास्त्रार्थ स्थल आनन्द बाग दुर्गाकुण्ड, वाराणसी पर हुआ जहाँ उमड़ी आर्यजन मेदिनी को आर्य विद्वानों ने सम्बोधित किया।

वैदिक सिद्धान्त परिचय एवं ध्यान योग यज्ञ शिविर

दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़ द्वारा सत्यार्थ प्रकाश पर आधारित वैदिक सिद्धान्त परिचय एवं ध्यान योग यज्ञ शिविर दिनांक ६ से १२ जनवरी २०२० को मनाया जा रहा है जिसमें आचार्य दिनेश कुमार जी एवं आचार्य ईश्वरानन्द जी शिविर में पधारे प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण प्रदान करेंगे। इस शिविर में आत्मा, परमात्मा, वेद, पुनर्जन्म, कर्मफल, स्वर्ग-नरक, फलित ज्योतिष, भूत-प्रेत, हस्तरेखा, तनाव, धर्म-अधर्म, तीर्थ, श्राद्ध आदि पर विशेष रूप से प्रशिक्षण दिये जायेंगे।

स्वास्थ्य

सेंधा नमक शरीर के लिए Best Alkalizer है।

आप सोच रहे होंगे की ये सेंधा नमक बनता कैसे है? आइये आज हम आपको बताते हैं कि नमक मुख्य रूप से कितने प्रकार के होते हैं। एक होता है समुद्री नमक दूसरा होता है सेंधा नमक (rock salt)। सेंधा नमक बनता नहीं है पहले से ही बना बनाया है। पूरे उत्तर भारतीय उपमहाद्वीप में खनिज पत्थर के नमक को 'सेंधा नमक' या 'सैन्धव नमक', लाहोरी नमक आदि-आदि नाम से जाना जाता है। जिसका मतलब है 'सिन्ध या सिन्धु के इलाके से आया हुआ'। वहाँ नमक के बड़े-बड़े पहाड़ हैं सुरंगे हैं। वहाँ से ये नमक आता है। मोटे मोटे टुकड़ो में होता है आजकल पिसा हुआ भी आने लगा है। यह हृदय के लिये उत्तम, दीपन और पाचन में मदद रूप, त्रिदोष शामक, शीतवीर्य अर्थात ठंडी तासीर वाला, पचने में हल्का है। इससे पाचक रस बढ़ते हैं।

सेंधा नमक के फायदे-

सेंधा नमक के उपयोग से रक्तचाप और बहुत सी गंभीर बीमारियों पर नियन्त्रण रहता है क्योंकि ये अम्लीय नहीं ये क्षारीय है (Alkaline)। क्षारीय चीज जब अम्ल में मिलती है तो वो न्यूट्रल हो जाता है और रक्त-अम्लता खत्म होते ही शरीर के ४८ रोग ठीक हो जाते हैं।

ये नमक शरीर में पूरी तरह से घुलनशील है। सेंधा नमक शरीर में ९७ पोषक तत्वों की कमी को पूरा करता है! इन पोषक तत्वों की कमी ना पूरी होने के कारण ही लकवे (paralysis) का अटैक आने का सबसे बड़ा जोखिम होता है। सेंधा नमक वात, पित्त और कफ को दूर करता है। यह पाचन में सहायक होता है और साथ ही इसमें पोटेशियम और मैग्नीशियम पाया जाता है जो हृदय के लिए लाभकारी होता है। यही नहीं आयुर्वेदिक औषधियों में जैसे लवण भास्कर, पाचन चूर्ण आदि में भी प्रयोग किया जाता है।

समुद्री नमक के भयंकर नुकसान -

ये जो समुद्री नमक है आयुर्वेद के अनुसार ये तो अपने आप में ही बहुत खतरनाक है! क्योंकि कम्पनियाँ इसमें अतिरिक्त आयोडीन डाल रही हैं। अब आयोडीन भी दो तरह का होता है एक तो भगवान का बनाया हुआ जो पहले से नमक में होता है। दूसरा होता है 'industrial iodine' ये बहुत ही खतरनाक है। तो समुद्री नमक जो पहले से ही खतरनाक है उसमें कम्पनियाँ अतिरिक्त industrial iodine डालकर पूरे देश को बेच रही हैं। जिससे बहुत सी गंभीर बीमरियाँ हम लोगों को हो रही हैं।

आमतौर से उपयोग में लाये जाने वाला समुद्री नमक उच्च रक्तचाप (high BP), डाइबिटीज, आदि गंभीर बीमारियों का भी कारण बनता है। इसका एक कारण ये है कि ये नमक अम्लीय होता है। जिससे रक्त-अम्लता बढ़ती है और रक्त-अम्लता बढ़ने से ये सब ४८ रोग आते हैं। ये पथरी का भी कारण बनता है ।

ये नमक नपुंसकता और लकवा का बहुत बड़ा कारण है। समुद्री नमक से सिर्फ शरीर को ४ पोषक तत्व मिलते हैं! और बीमारियाँ जरूर साथ में मिल जाती हैं!

रिफाइण्ड नमक में ९८% सोडियम क्लोराइड ही है शरीर इसे विजातीय पदार्थ के रुप में रखता है। यह शरीर में घुलता नही है। इस नमक में आयोडीन को बनाये रखने के लिए Tricalcium Phosphate, Magnesium Carbonate, Sodium Aluminium Silicate जैसे रसायन मिलाये जाते हैं जो सीमेंट बनाने में भी इस्तेमाल होते हैं। विज्ञान के अनुसार यह रसायन शरीर में रक्त वाहिनियों को कड़ा बनाते हैं, जिससे ब्लॉक्स बनने की संभावना बढ़ती है और ऑक्सीजन जाने में परेशानी होती है। जोड़ों का दर्द और गठिया, प्रोस्टेट आदि होती है। आयोडीन नमक से पानी की जरुरत ज्यादा होती है। १ ग्राम नमक अपने से २३ गुना अधिक पानी खींचता है। यह पानी कोशिकाओं के पानी को कम करता है। इसी कारण हमें प्यास ज्यादा लगती है।

हजारों साल पुरानी आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में भी भोजन में सेंधा नमक के ही इस्तेमाल की सलाह दी गई है। भोजन में नमक व मसाले का प्रयोग भारत, नेपाल, चीन, बंगलादेश और पाकिस्तान में अधिक होता है। आजकल बाजार में ज्यादातर समुद्री जल से तैयार नमक ही मिलता है। जबकि १९६० के दशक में देश में लाहौरी नमक मिलता था। यहाँ तक कि राशन की दुकानों पर भी इसी नमक का वितरण किया जाता था। स्वाद के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होता था। समुद्री नमक के बजाय सेंधा नमक का प्रयोग होना चाहिए।

साभार- **Dhirendra Dubey**

समाचार

ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर २०१९

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ (गुज.) में आचार्य सत्यजित् जी के निर्देशन में ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का २३ से ३० दिसम्बर २०१९ तक आयोजन किया जा रहा है। इसमें ७० से ८० वर्ष तक के किसी भी विषय में अध्ययन किए पुरुष व महिलाएँ भाग ले सकते हैं। शिविर का शुल्क ३०००.०० रु. रखा गया है जो बैंक ऑफ बड़ौदा, धनसूरा, जिला-अरवल्ली, IFSC नं.BARB0DHANSU में जमा करवा कर सूचित करें। जो भी इस शिविर में प्रशिक्षण हेतु जाना चाहें वो निम्न दूरभाष पर सम्पर्क कर अपना पंजीयन करा सकते हैं। दूरभाष नं. ०२७७०-२८७४१७, चलभाष ९४२७०५९५५०

गरबा उत्सव में आर्य समाज ने लगाया वैदिक साहित्य का स्टॉल

आर्य समाज, कोटा द्वारा अपने वेद प्रचार कार्यक्रम के अंतर्गत गुजराती

समाज गरबा डांडिया उत्सव में वैदिक साहित्य का स्टॉल लगाया गया। जिसमें वेद व वैदिक साहित्य महर्षि दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका सहित अन्य महापुरुषों के जीवन चरित्र व बाल साहित्य उपलब्ध करवाया गया। इस शिविर में प्रान्तीय अध्यक्ष अर्जुन देव चड्ढ़ा, आर्य विदुषी अर्पणा पाण्डेय, प्रदीप शर्मा व किशन लाल आर्य उपस्थित रहे। – अर्जुन देव चड्ढा, आर्य समाज, कोटा

भव्य शताब्दी समारोह

मगध प्रमण्डलीय आर्य सभा के मार्गदर्शन में आर्य समाज, नेमदारगंज (नवादा-बिहार) का दिनांक ७ से १० नवम्बर २०१९ तक, शताब्दी समारोह सह प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन बहुत ही भव्य रूप से मनाया जा रहा है। जिसमें यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान, सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली, यशस्वी आर्य नेता आनन्द कुमार आर्य एवं बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी उपस्थित रहेंगे। इसमें कवि सम्मेलन, वैदिक विद्वानों के प्रवचन एवं सुमधुर भजनों का आयोजन किया जा रहा है। – संजय सत्यार्थी, संयोजक

सर्वजातीय परिचय सम्मेलन सम्पन्न

गुरु विरजानन्द वैदिक ट्रस्ट एवं आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर मध्यप्रदेश के तत्वावधान में २७वां सर्वजातीय परिचय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पंडित योगेन्द्र महन्त एवं कैलाश खण्डेलवाल थे। विशेष रूप से रामेश्वर त्रिवेदी, विजय गोयल, संजय आर्य (श्रद्धानन्द बाल आश्रम), योगाचार्य रूपनारायण मालवीय, आचार्य कैलाश, श्री दिनेश शर्मा (कवि) आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में यह भी घोषणा की गई कि २२ दिसम्बर २०१९ को अगला सर्वजातीय परिचय सम्मेलन होगा। – प्रणवीर शास्त्री, प्रचार सचिव

गुरु विरजानन्द गुरुकुल का प्रवेश प्रारम्भ

गुरु विरजानन्द गुरुकुल, इन्दौर मध्यप्रदेश में आर्ष पाठ्यविधि से कक्षा ४ उत्तीर्ण बालकों के लिए प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। जो अभिभावक अपने बालकों को वैदिक संस्कृति, वेद, यज्ञ, योग एवं संस्कार युक्त शिक्षा दिलाना चाहते हैं वे शीघ्र से शीघ्र चलभाष ९९७७९९७७७७, ९९७७९९७७७७ पर सम्पर्क कर सकते हैं।

– आचार्य डॉ. भानुप्रताप वेदालंकार, अधिष्ठाता

आर्य समाज, विदिशा का शताब्दी समारोह

दिनांक ९ से १२ नवम्बर २०१९ को आर्य समाज, विदिशा (म.प्र.) की स्थापना के १०१ वर्ष पूर्ण होने पर भव्य शताब्दी समारोह मनाया जा रहा है। जिसमें आर्य जगत् के प्रमुख संन्यासीगण, वैदिक विद्वान्, प्रसिद्ध भजनोपदेशक एवं वैदिक विदुषियाँ पधार रही हैं। आर्य समाज के उच्च श्रेणी के आर्यनेतागणों को भी आमंत्रित किया गया है।

– विश्वेन्द्र आर्य, मंत्री

सुप्रसिद्ध संन्यासी स्वामी शारदानन्द जी का निधन

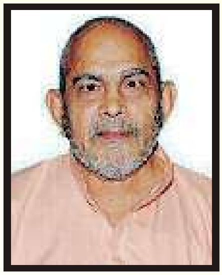

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध संन्यासी स्वामी शारदानन्द सरस्वती जी का विगत २६ सितम्बर २०१९ को देहावसान हो गया। पिछले कुछ वर्षों से स्वामी जी आर्य समाज, कांकरिया, अहमदाबाद में निवास कर रहे थे।

२६ सितम्बर को स्नानादि से निवृत हो कर आपने शरीर त्याग दिया। स्वामी जी का उत्तरार्द्ध गुजरात में बिता। दो दशक वे आनन्द आर्यसमाज में रहे। तत्पश्चात् आबू में आपने अपने मार्गदर्शन में दयानन्द पेराडाईज नाम से एक बड़ी शिक्षण संस्थान को आकारित किया। जीवन के अन्तिम दिन आपने आर्य समाज, कांकरिया, अहमदाबाद में व्यतीत किया।

अहमदाबाद में आर्य समाज, कांकरिया के सदस्यों विशेषरूप से श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, श्री जयदेव जी आर्य, श्री भरतभाई अग्रवाल आदि ने स्वामी जी की बड़े मनोयोग से उदारता पूर्वक सेवा की।

स्वामी शारदानन्द जी का पूर्वाश्रम का नाम शशीधर पाठक था। आपके माता-पिता का स्वर्गवास उस समय हो गया था, जब वे मात्र दो वर्ष के थे। बाद में आपका पालन-पोषण उनके नाना-नानी ने किया। आपके नाना पण्डित श्री गणपति शास्त्री थे। आपने ही स्वामी जी को शिक्षा दिलवाई। बाद में आपको वनस्थली विद्यापीठ का संचालन भी सौंपा।

– लाभेन्द्र शास्त्री, मंत्री

आर्य समाज, अलवर द्वारा वार्षिकोत्सव एवं कार्तिक महोत्सव का आयोजन

आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर द्वारा वार्षिकोत्सव एवं कार्तिक महोत्सव का दिनांक १३ अक्टूबर से १२ नवम्बर २०१९ तक आयोजन किया जा रहा है जिसमें प्रसिद्ध भजनोपदेशक वैदिक विद्वान् एवं आर्य समाज के संन्यासीगण की उपस्थिति रहेगी। – प्रदीप आर्य, प्रधान

वैदिक विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री जी सम्मानित

दिनांक १३ अक्टूबर २०१६ को बीपीटीपी की सोसायटी सैक्टर-८५, ब्लॉक- ए के आवासीय पार्क, ग्रेटर फरीदाबाद, हरियाणा में ब्र. राजेन्द्रार्यः के सत्प्रयास से वैदिक वाङ्मय के विद्वान् तथा वैदिक मिशन मुम्बई के अध्यक्ष पूज्य आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में 'देवयज्ञ एवं आध्यात्मिक सत्संग' का आयोजन किया गया। यज्ञ के यजमान के आसनों को श्री कर्मचन्द जी एवं श्रीमती उषा जी, श्री आशीष शर्मा जी एवं श्रीमती किरण शर्मा जी, श्री अशोक कुमार जी एवं श्रीमती अर्चना जी तथा श्री अखिलेश कुमार जी एवं श्रीमती लता सिंह जी ने सुशोभित किया। इस अवसर पर पं. राजेश शास्त्री जी, फरीदाबाद तथा जितेन्द्र शास्त्री जी, बल्लभगढ़ के मधुर भजनोपदेश तथा पूज्य आचार्य जी का वेद प्रवचन हुआ। मान्य डॉ. सोमदेव शास्त्री जी का भारत सरकार के उपसचिव श्री कर्मचन्द जी एवं आर्य समाज शक्तिनगर, उत्तर प्रदेश के पूर्व प्रधान श्री एस. एन. सिंह जी ने माल्यार्पण द्वारा अभिनन्दन एवं आर. डब्लू. ए. के पूर्व अध्यक्ष श्री मुकेश मिश्र जी ने रु. ११००१/- की राशि प्रदान कर सोसायटी की तरफ से सम्मानित किया।

वैदिक विज्ञान का बजा डंका

ऐतरेय ब्राह्मण के वैज्ञानिक भाष्य 'वेद-विज्ञान-आलोक' एवं वैदिक रश्मि सिद्धान्त के प्रस्तोता आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक के सान्निध्य में दिनांक ४ एवं ५ अक्टूबर २०१६ तक सम्पन्न 'वैदिक एवं आधुनिक विज्ञान महोत्सव' में विभिन्न सत्रों में अत्यन्त सारगर्भित प्रवचन हुए। अग्निहोत्र का सम्पूर्ण आयोजन अलीगढ़ से पधारे स्वामी श्रद्धानन्द जी

के निर्देशन एवं ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी विदेह योगी जी के अतिरिक उपस्थित गणमान्यजनों में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य, आर्यप्रतिनिधि सभा बंगाल के प्रधान श्री दीन दयाल गुप्त, राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त माननीय सज्जन सिंह जी कोठारी के अतिरिक्त अनेक वैदिक विद्वान् व उच्च कोटि के वैज्ञानिक उपस्थित थे। जिनमें से डी. आर. डी. ओ. के पूर्व निदेशक प्रो. राम गोपाल जी, श्री विनीत आर्य (आई.आर.एस.), पर्यावरण वैज्ञानिक डॉ. सत्य प्रकाश मेहरा, डॉ. वेद प्रकाश आर्य, श्री जोगेश्वर गर्ग-विधायक, जालोर, कर्नल पूरण सिंह राठौड़, श्री केशवदेव शर्मा-भजनोपदेशक, डॉ. सत्यमित्र आर्य, प्रो. बसंत कुमार मदनसुरे, डॉ. संदीप कुमार सिंह तथा श्री अशोक आर्य आदि का नाम उल्लेखनीय हैं। शंका समाधान का क्रम इस महोत्सव की विशेषता रही जिसमें आचार्य अग्निव्रत जी ने युवाओं के द्वारा वेद-विज्ञान पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर भलीभाँति दिया। न्यास के उपाचार्य श्री विशाल आर्य ने पावर प्वाइन्ट प्रेजेन्टेशन के द्वारा अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास, अजमेर में श्रद्धांजलि सभा

महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास, भिनायकोठी, अजमेर द्वारा सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत, नवजागरण के पुरोधा, नारी शिक्षा के प्रबल पोषक, आजादी के प्रथम स्वप्नद्रष्टा, वेदोद्धारक आर्य समाज के संस्थापक व युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती का १३६ वां बलिदान दिवस दिनांक २७ अक्टूबर २०१६ को मनाया जा गया। जिसमें विशेष रूप से वृहद यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ।

- डॉ. श्रीगोपाल बाहेती, कार्यकारी प्रधान

आर्य जगत् को भारी क्षति

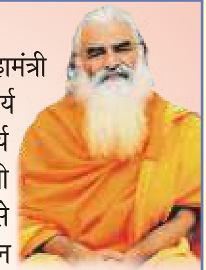

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के महामंत्री और गुरुकुल पूठ के संचालक, आर्य समाज के प्रखर वक्ता, संन्यासी, आर्य जगत् के प्रेरणाश्रोत (स्मृतिशेष) स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी का ज्वर अटैक से पीड़ित होने के कारण आकस्मिक निधन हो गया है। यह आर्य जगत् की एक अपूरणीय क्षति है। सम्पूर्ण आर्य जगत् उनके दिवंगत होने से स्तब्ध है। हम न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से स्वामी जी को विनम्र श्रद्धांजली अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वो दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करे।

- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०९/१९ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०९/१९ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; दिल्ली, श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री गोरवर्धन लाल झंवर; सिहोर (म.प्र.), श्री श्याम मोहन गुप्ता; विजय नगर (इन्दौर), श्री हरिनारायण शर्मा; देवास (म.प्र.), श्री अनन्त लाल उज्जैनिया; टी.टी. नगर (भोपाल), श्री सोमपाल सिंह यादव; रामपुर, श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी; बीकानेर (राज.), प्रधान जी; आर्यसमाज, बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान; बिजय नगर (राज.), श्री किशनाराम आर्य बिलू; बिलू (राज.) कंचन सोनी; बीकानेर (राज.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेर (राज.), श्रीमती परमजित कौर; नई दिल्ली, श्री सोमपाल सिंह यादव; रामुपर, श्री राजनारायण चौधरी, शाजापुर (म.प्र.), श्री जीवन लाल आर्य; नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर (म.प्र.)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ १४ पर अवश्य पढ़ें।

सत्यार्थ-पीयूष

ईश्वर सगुण अथवा निर्गुण

महर्षि दयानन्द का स्पष्ट मत है कि साकारता संयोगजन्य होती है। अतः प्रत्येक साकार वस्तु के कारण में निराकार चेतन सत्ता का होना परमावश्यक है। वे सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में लिखते हैं-

'जो (ईश्वर) साकार हो तो उसके नाक, कान, आँख आदि अवयवों का बनानेहारा दूसरा होना चाहिये क्योंकि जो संयोग से उत्पन्न होता है उसको संयुक्त करने वाला निराकार चेतन अवश्य होना चाहिए। जो कोई यहाँ ऐसा कहे कि ईश्वर ने स्वेच्छा से आप ही आप अपना शरीर बना लिया तो भी वही सिद्ध हुआ कि शरीर बनाने से पूर्व निराकार था, इसलिये परमात्मा कभी शरीर धारण नहीं करता किन्तु निराकार होने से सब जगत् को सूक्ष्म कारणों से स्थूलाकार बना देता है।'

निर्गुण-सगुण विवेचन- साधारण तौर पर यह मान्यता प्रचलित हो गई है कि सगुण का अर्थ साकार तथा निर्गुण का अर्थ निराकार होता है। इसी आधार पर ईश्वर भक्तों में दो धाराऐं चलीं। जो ईश्वर को निराकार मानते हैं यथा कबीर आदि, वे निर्गुण तथा ईश्वर को साकार मानने वाले सूर, तुलसी आदि सगुण धारा के अन्तर्गत आए। यह भी मान्यता है कि ईश्वर कभी निराकार होता है तो कभी साकार।

निराकार होते हुए भी सृष्टि का निर्माता-

एषो ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वो ह जातः सऽउ गर्भे अन्तः।
सऽएव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः।।

- यजु. ३२/४

यह पूर्वोक्त ईश्वर जगत् को उत्पन्न करके प्रकाशित होता हुआ सब दिशाओं में व्याप्त होकर इन्द्रियों के बिना ही सब इन्द्रियों के कर्मों को, सर्वव्यापक होने के कारण करता हुआ सब प्राणियों के हृदय में रहता है। वह बीते हुए और आने वाले कल्पों में जगत् की उत्पत्ति के लिए पहिले प्रकट (सक्रिय) होता है। वह ध्यान के अभ्यासी मनुष्य के द्वारा ही जानने योग्य है, अन्य के द्वारा नहीं।

अधिकांश पौराणिक बन्धु ऐसा मानते हैं, पर उन्हें अपने सर्वपूज्य आचार्य शंकर की बात सदैव स्मृत रखनी चाहिये। वेदान्त दर्शन सूत्र ३/२/११ **'न स्थानतोऽपि परस्योभयलिंग सर्वत्र हि'** की व्याख्या में आचार्य शंकर स्पष्ट लिखते हैं- 'स्वतः ही परब्रह्म साकार व निराकार दोनों प्रकार का नहीं हो सकता। एक ही वस्तु रूपादिवाली तथा रूपरहित नहीं हो सकती, विरोध होने से। .... इसीलिए सम्पूर्ण भौतिक गुणों से रहित ब्रह्म निराकार है।

योगजन्य अप्रतिम मेधा के धनी महर्षि दयानन्द ने इस विषय को अभूतपूर्व रूप से स्पष्ट किया। सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में वे लिखते हैं- जैसे जड़ के रूपादि गुण हैं और

चेतन के ज्ञानादि गुण जड़ में नहीं हैं, वैसे चेतन में इच्छादि गुण हैं और रूपादि जड़ के गुण नहीं हैं, इसलिये **'यद्गुणैस्सह वर्त्तमानं तत्सगुणम्', 'गुणेभ्यो यन्निर्गतं पृथग्भूतं तन्निर्गुणम्'** जो गुणों से सहित वह सगुण और गुणों से रहित वह निर्गुण कहाता है। अपने अपने स्वाभाविक गुणों से सहित और दूसरे विरोधी गुणों से रहित होने से सब पदार्थ सगुण और निर्गुण है। कोई ऐसा पदार्थ नहीं है कि जिसमें केवल निर्गुणता या केवल सगुणता हो, किन्तु एक ही में सगुणता और निर्गुणता सदा रहती है। वैसे ही परमेश्वर अपने अनन्त ज्ञान बलादि गुणों से सहित होने से 'सगुण' और रूपादि जड़ के गुणों से पृथक् होने से निर्गुण कहाता है। यजु. ४०/५ की व्याख्या में सगुण और निर्गुण की इसी अपूर्व यथार्थ परिभाषा को परमेश्वर में घटाते हुए महर्षि लिखते हैं-

'वह परमात्मा सबमें व्यापक, शीघ्रकारी और अनन्त बलवान, जो शुद्ध, सर्वज्ञ, सबका अन्तर्यामी, सर्वोपरि विराजमान, सनातन, स्वयंसिद्ध परमेश्वर अपनी जीवरूप सनातन अनादि प्रजा को अपनी सनातन विद्या से यथावत् अर्थों का बोध वेद द्वारा कराता है यह सगुण स्तुति, अर्थात् जिस-जिस गुण से सहित परमेश्वर की स्तुति करना वह सगुण। और अकाय- अर्थात् वह कभी शरीर धारण वा जन्म नहीं लेता, जिसमें छिद्र नहीं होता। नाड़ी आदि के बन्धन में नहीं आता और कभी पापाचरण नहीं करता, जिसमें क्लेश, दुःख, अज्ञान कभी नहीं होता, इत्यादि जिस-जिस राग द्वेषादि गुण से पृथक् मानकर परमेश्वर की स्तुति करना है, वह निर्गुण स्तुति है।

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग

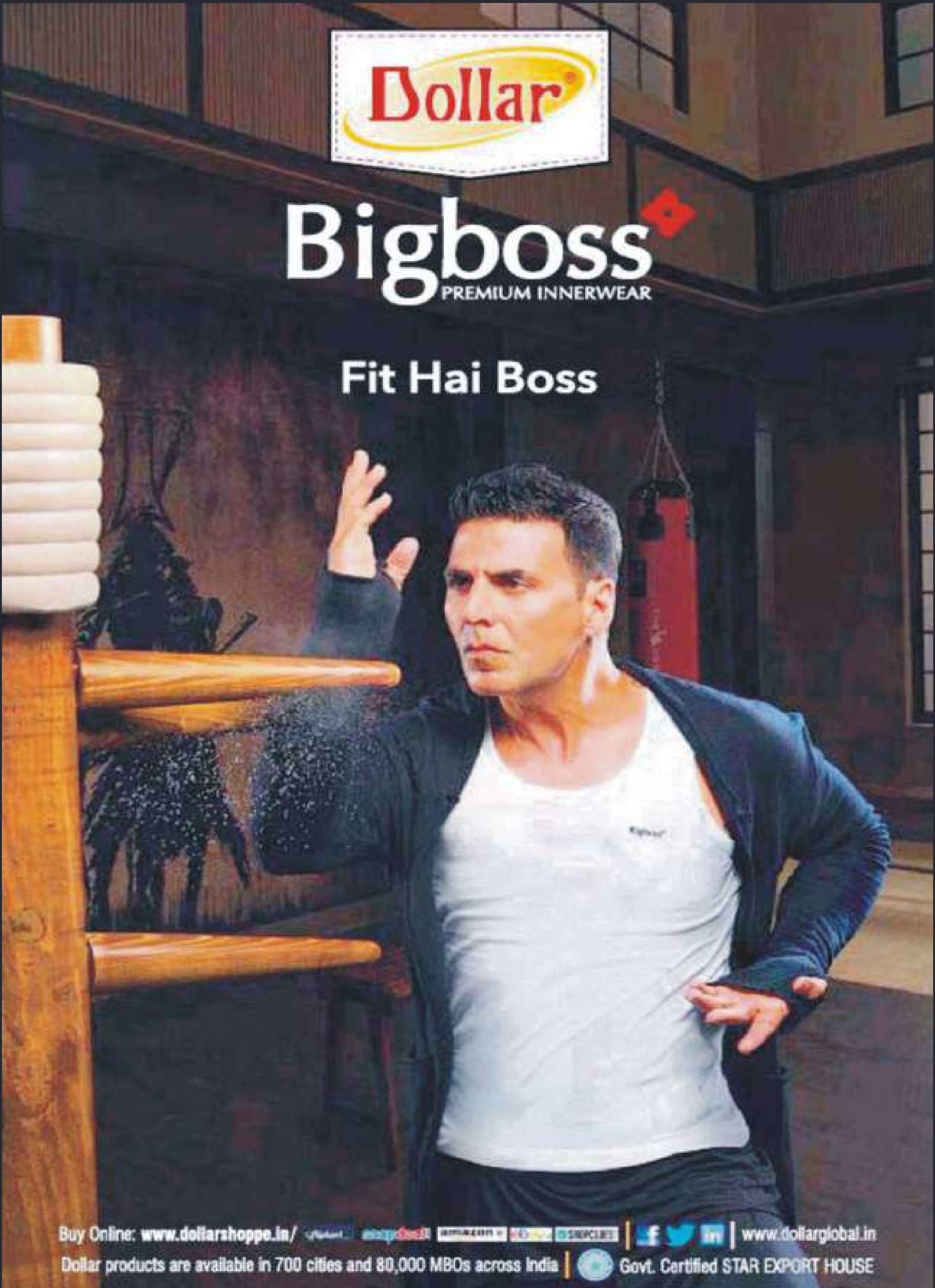
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Buy Online: www.dollarshoppe.in/
www.dollarglobal.in
Dollar products are available in 700 cities and 80,000 MBOs across India
Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 November-2019 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

{शासक 'कर' के रूप में} जो धन लेवे, तो भी उस प्रकार से लेवे कि जिससे किसान आदि खाने-पीने और धन से रहित होकर दुःख न पावें।

सत्यार्थ प्रकाश, षष्ठ समुल्लास
पृष्ठ ६६

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर